खबर पेज 7 पर

गंभीर समाचार

समय–समाज–संस्कृति

खबर पेज 5 पर

वर्ष -11 अंक–12 पाक्षिक समाचार पत्रिका कोलकाता, सोमवार 1 – 15 सितम्बर 2025 मूल्यः 5 रुपये RNI No.WBHIN/2014/59321, ISSN No. 2456/3005 Kolkata कुल पृष्ठ – 8

सुविचार

♦जलते हुए घर में से आदमी जिस वस्तु को निकाल लेता है, वही उसके काम की होती है, न कि वह जो वहाँ जल जाती है। इसी प्रकार यह संसार जरा और मरण से जल रहा है। इसमें से दान देकर निकाल लो। जो दिया जाता है वही सुरक्षित होता है।

♦अप्रिय किंतु परिणाम में हितकर हो ऐसी बात कहने और सुनने वाले दुर्लभ होते हैं।

शेरो-शायरी

तेरी आँखों में खो जाने का मन करता है,
तुझे देखकर हर ख्वाब पूरा होने का अहसास होता है।

दिल के ज़ख्मों को छुपाते हैं,
मुस्कान से अपने दिन सजाते हैं।

चाँद भी शर्माए तेरे नूर से,
तू जो पास हो, दिल भरे गुरूर से।

तन्हाई से दोस्ती कर ली हमने,
क्योंकि लोग बदलते देर नहीं लगाते।

खुद को खुदा बना बैठा हूं,
हर दर्द अपना छुपा बैठा हूं।

वंशवाद में सिमटती भारत की राजनीति

♦रिपोर्ट में हुआ खुलासा ♦हर पांच में से एक जनप्रतिनिधि राजनीतिक परिवारों से रखते हैं ताल्लुक

संजय सक्सेना

भारतीय राजनीति में वंशवाद का मुद्दा कोई नई बात नहीं है, लेकिन हाल ही में एसोसिएशन फॉर डेमोक्रेटिक रिफॉर्म्स (एडीआर) और नेशनल इलेक्शन वॉच (एलईडब्लूय) द्वारा 12 सितंबर 2025 को जारी रिपोर्ट ने इस पुरानी समस्या को एक बार फिर ताज़ा कर दिया है। इस रिपोर्ट में देशभर के 5,204 सांसदों, विधायकों और विधान परिषद सदस्यों की गहन पड़ताल की गई और चौंकाने वाला तथ्य सामने आया कि हर पांच में से एक नेता, यानी लगभग 21 प्रतिशत जनप्रतिनिधि, राजनीतिक परिवारों से आते हैं। यह आंकड़ा सिर्फ संख्याओं का खेल नहीं है, बल्कि यह लोकतंत्र की कमजोर होती नींव का प्रतीक है। लोकसभा में यह आंकड़ा और भी अधिक, 31 प्रतिशत तक पहुंच गया है। राज्यसभा में 21 प्रतिशत, राज्य विधानसभाओं में 20 प्रतिशत और विधान परिषदों में 22 प्रतिशत नेता परिवारवाद की छाया में राजनीति कर रहे हैं। परिवारवाद की जड़ें इतनी गहरी हैं कि उन युवा नेताओं को आगे बढ़ने का मौका ही नहीं मिलता है जिनके परिवार में कोई

राजनीति से जुड़ा नहीं है। सवाल यह है कि कांग्रेस में गांधी परिवार, राष्ट्रीय जनता दल में लालू के बाद उनके बेटे तेजस्वी यादव, समाजवादी पार्टी में मुलायम सिंह के बाद उनके बेटे अखिलेश यादव, तमिलनाडु में करुणानिधि की वंशवाद वाली सियासत, महाराष्ट्र में उद्धव की शिवसेना में उद्धव ठाकरे के बाद उनके बेटे आदित्य ठाकरे, रामविलास पासवान के बाद उनके बेटे चिराग पासवान को,पंजाब में बादल परिवार, हरियाणा में चौटाला परिवार तो बसपा में मायावती के बाद उनके भतीजे आकाश, पश्मिच बंगाल में ममता बनर्जी के भतीजे अभिषेक बनर्जी को ही उत्तराधिकारी की कुर्सी क्यों मिलती है। क्या पार्टी में परिवार से बाहर के नेताओं की कमी रहती है। बात राष्ट्रीय दलों से शुरू की जाये तो इसमें कांग्रेस सबसे आगे है। नेहरू-गांधी परिवार की विरासत यहां स्पष्ट रूप से देखी जा सकती है। राहुल गांधी और प्रियंका गांधी जैसे नाम सिर्फ कांग्रेस की ही नहीं, बल्कि देश की राजनीति में वंशवाद का प्रतीक बन चुके हैं। कांग्रेस के कुल नेताओं में 32 प्रतिशत परिवारवादी हैं। समाजवादी पार्टी (सपा) में यह आंकड़ा 30 प्रतिशत, भाजपा में 17 प्रतिशत और वामपंथी दल सीपीआई (एम) में केवल 8 प्रतिशत है। इसके विपरीत, तृणमूल कांग्रेस और एआईएडीएमके जैसी दलों में यह प्रतिशत काफी कम है (10 और 4 प्रतिशत। इसका कारण है कि ये दल मजबूत संगठन और काडर-आधारित संरचना पर विश्वास करते हैं, जिससे नए नेताओं को मौका मिल पाता है।क्षेत्रीय दलों की स्थिति और भी चिंताजनक है। एनसीपी (शरद पवार गुट) और जम्मू-कश्मीर नेशनल कॉन्फ्रेंस में 42-42 प्रतिशत नेता राजनीतिक परिवारों से आते हैं। वाईएसआर कांग्रेस में यह आंकड़ा 38 प्रतिशत और तेलुगु देशम पार्टी (टीडीपी) में 36 प्रतिशत है। यह दर्शाता है कि दक्षिण भारत में भी परिवारवाद अब राजनीति का स्थायी हिस्सा बन चुका है। टीडीपी के चंद्रबाबू नायडू और वाईएसआरसी के जगन मोहन रेड्डी इसके जीते-जागते उदाहरण हैं।राज्यवार आंकड़े भी चिंताजनक हैं। उत्तर प्रदेश वंशवाद का सबसे बड़ा गढ़ माना जाता है। 604 जनप्रतिनिधियों में 141 (23 प्रतिशत) परिवारवादी हैं। लोकसभा में यूपी के 28 सांसदों में राहुल गांधी (रायबरेली), अखिलेश यादव (कन्नौज), अनुप्रिया पटेल (अपना दल), जितिन प्रसाद (पीलीभीत) और जयंत चौधरी (रालोद) शामिल हैं। राज्यसभा में रामगोपाल यादव, आरपीएन सिंह और नीरज शेखर जैसे नामों ने यह साबित किया कि यहां वंशवाद गहराई तक फैला हुआ है। समाजवादी पार्टी के 161 नेताओं में 48 (30 प्रतिशत) और भाजपा के 17 प्रतिशत नेता वंशवादी हैं।अनुपात में आंध्र प्रदेश सबसे ऊपर है, जहां 255 नेताओं में 86 (34 प्रतिशत) परिवारवादी हैं। महाराष्ट्र में 403 में 129 (32 प्रतिशत), बिहार में 360 में 96 (27 प्रतिशत), कर्नाटक में 326 में 94 (29 प्रतिशत) और असम में केवल 13 (9 प्रतिशत) नेता परिवारवादी हैं। तमिलनाडु (15 प्रतिशत) और पश्चिम बंगाल (9 प्रतिशत) में काडर-आधारित दलों की मजबूती के कारण यह आंकड़ा कम है। झारखंड और हिमाचल प्रदेश में यह क्रमशः 28 और 27 प्रतिशत है। इन आंकड़ों से यह साफ़ होता है कि बड़े और प्रभावशाली राज्यों में वंशवाद लोकतंत्र को निगलता जा रहा है। महिलाओं के मामले में स्थिति और भी गंभीर है।

विकास के लिए शांति जरूरी

हिंसा के बाद पहली बार मणिपुर पहुंचकर बोले पीएम मोदी

निज संवाददाता : लंबी बहस के बाद आखिरकार प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने मणिपुर की धरती पर कदम रख ही दिया। शनिवार को चुराचांदपुर में एक जनसभा में प्रधानमंत्री ने हिंसा को भुलाकर शांति का आह्वान किया। उनका संदेश था-विकास के लिए शांति जरूरी है। उन्होंने पूर्वोत्तर राज्य में विकास की गति को जारी रखने के लिए संघर्ष रोकने की अपील की। उन्होंने यह भी कहा कि केंद्र सरकार समझौता करने के लिए राज्य के विभिन्न समूहों के साथ बातचीत जारी रखे हुए है। मालूम हो कि मणिपुर 2023 से कुकी और मैतेई समुदायों के बीच हिंसा में घिरा हुआ है। हालांकि, प्रधानमंत्री मोदी ने पिछले 2 सालों में एक बार भी मणिपुर का दौरा नहीं किया है। जिसके चलते उन्हें विपक्ष के गुस्से का सामना करना पड़ा। उस दाग को मिटाने के लिए प्रधानमंत्री ने शनिवार को मणिपुर में कदम रखा और मणिपुर के लिए उपहारों का गुलदस्ता तैयार किया। चुराचांदपुर में एक सभा में मोदी ने कहा-मणिपुर में आशा और विश्वास की एक नई सुबह शुरू हुई है। हालांकि, विकास के

लिए शांति आवश्यक है। पिछले 11 वर्षों में यहां कई संघर्ष हुए हैं। हालांकि, लोगों ने शांति का रास्ता चुना है। यह याद दिलाते हुए कि सरकार मणिपुर में हिंसा को रोकने के लिए लगातार काम कर रही है, मोदी ने कहा, केंद्र सरकार मणिपुर में सभी समूहों के बीच सुलह कराकर शांति स्थापित करने के लिए काम कर रही है। राज्य के लोगों से अपील करते हुए प्रधानमंत्री ने संदेश दिया, अपने परिवार और बच्चों का भविष्य सुनिश्चित करने के लिए सभी को शांति के मार्ग पर लौटना चाहिए। मैं आपके साथ हूं। भारत सरकार आपके साथ है। सरकार मणिपुर को सामान्य बनाने के लिए हर संभव प्रयास कर रही है। जिन लोगों ने अपने घर खो दिए हैं उन्हें घर दिए जा रहे हैं। प्रभावितों को विशेष पैकेज दिए जा रहे हैं।

निष्पक्ष चुनाव के लिए बंगाल में एसआईआर जरूरी : दिलीप घोष

निज संवाददाता : पश्चिम बंगाल विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष शुभेंदु अधिकारी ने बिहार की तर्ज पर राज्य में विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) लागू करने की मांग की है। भाजपा नेता दिलीप घोष ने उनकी मांग का समर्थन किया है। उन्होंने कहा कि जिस तरह चुनाव आयोग ने बिहार में एसआईआर को प्रभावी ढंग से लागू किया, वही मॉडल पश्चिम बंगाल में भी अपनाया जाना चाहिए। भाजपा नेता दिलीप घोष ने कहा-बिल्कुल, जिस तरह चुनाव आयोग ने बिहार में एसआईआर को सफलतापूर्वक लागू किया, ऐसा ही बंगाल में भी होगा और यह यहां भी सफल होगा। इसके बाद निष्पक्ष चुनाव होंगे। टीएमसी सांसद अभिषेक बनर्जी के बयान पर दिलीप घोष ने तीखी प्रतिक्रिया दी। घोष ने कहा कि टीएमसी की सरकार बंगाल में तीन बार चुनी गई है, इसलिए सबसे पहले उन्हें इस्तीफा देना चाहिए। उन्होंने आगे कहा-जो कुछ हुआ, वह हो चुका है। देश में कई चीजें गलत हो रही थीं। पीएम मोदी आए

और उन्होंने इसे ठीक किया। संसद से लेकर सुप्रीम कोर्ट तक नए कानून बनाए गए और चुनाव आयोग को मजबूत किया गया। 150 साल पुराने ब्रिटिश कानून को सुधारा गया। उसी तरह, मतदाता सूची में त्रुटियों को भी ठीक किया जाएगा। चुनाव आयोग इसके लिए तैयारी कर रहा है। दिलीप घोष ने भारत की वैश्विक मित्रता पर जोर देते हुए कहा-भारत का पूरी दुनिया के साथ दोस्ताना रिश्ता है। जब भी दुनिया में कहीं कोई समस्या होती है या मानवता संकट में होती है, हम सबसे पहले पहुंचकर मदद करते हैं। हम सेवा करते समय जाति, धर्म या देश नहीं देखते। इसी तरह, अमेरिका के लोगों के साथ भी हमारे अच्छे रिश्ते हैं।

पड़ोसी देशों की अराजकता के बीच मजबूती का प्रतीक बना भारत का संविधान

अजय कुमार

हमें अपने संविधान पर गर्व है पड़ोसी देशों को देखिए, वहां क्या हो रहा है।'' सुप्रीम कोर्ट के मुख्य न्यायाधीश बी. आर. गवई की यह टिप्पणी हाल ही में संविधान पीठ की सुनवाई में आई। यह वाक्य केवल एक कानूनी प्रक्रिया का हिस्सा नहीं था, बल्कि दक्षिण एशियाई लोकतंत्र की मौजूदा स्थिति पर गहन चिंतन और चेतावनी भी था। गवई ने नेपाल और बांग्लादेश का हवाला देकर बताया कि जब संवैधानिक संस्थाएं कमजोर होती हैं, जब जनता का भरोसा व्यवस्था से उठता है, तो लोकतंत्र भीड़तंत्र में बदल जाता है। भारत का संविधान आज इस मायने में सबसे बड़ी ढाल है कि उसने बार-बार हमें संकटों से निकालकर लोकतंत्र की नींव को मजबूत रखा।नेपाल का उदाहरण सबके सामने है। बीते दिनों वहां की सड़कों पर जिस तरह का आक्रोश देखने को मिला, उसने पूरे दक्षिण एशिया का ध्यान खींचा। सोशल मीडिया पर बैन लगाने के सरकार के फैसले ने आग में घी का काम किया। युवा वर्ग, जिसे 'जेन-जेड' कहा जा रहा है, अब केवल अभिव्यक्ति की आज़ादी के लिए नहीं बल्कि भ्रष्टाचार, बेरोजगारी और राजनीतिक अस्थिरता के खिलाफ आवाज उठा रहा है। संसद भवन तक भीड़ का पहुंचना, सुप्रीम कोर्ट परिसर में तोड़फोड़ और नेताओं के घरों पर हमले यह साबित करते हैं कि जनता का धैर्य टूट चुका है। प्रधानमंत्री केपी शर्मा ओली और राष्ट्रपति रामचंद्र पौडेल को इस्तीफा देना पड़ा, लेकिन हिंसा थमी नहीं। सेना को कर्फ्यू लगाना पड़ा, फिर भी आंदोलन जारी है।नेपाल में यह अस्थिरता नई नहीं है। 2008 में जब राजशाही खत्म हुई, तो लगा था कि अब लोकतंत्र स्थिरता और विकास का रास्ता खोलेगा। लेकिन हकीकत उलट निकली। पिछले 17 वर्षों में वहां 14 सरकारें बदल चुकी हैं, कोई भी प्रधानमंत्री कार्यकाल पूरा नहीं कर सका। बार-बार राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री के अधिकारों पर विवाद हुआ। सुप्रीम कोर्ट ने सरकारें गिराईं और बहाल कीं। संविधान, जो 2015 में लागू हुआ था, वह भी स्थिरता नहीं ला सका। परिणाम यह है कि जनता अब व्यवस्था से मोहभंग कर चुकी है और राजशाही की वापसी की मांग तक उठने लगी है।बांग्लादेश का परिदृश्य भी कुछ ऐसा ही है। हाल ही में प्रधानमंत्री शेख हसीना को सत्ता छोड़नी पड़ी और वे कुछ समय के लिए भारत में शरण लेने आईं। यह उस देश की त्रासदी है जिसने 1971 में पाकिस्तान से अलग होकर स्वतंत्रता पाई थी और लोकतांत्रिक भविष्य की उम्मीद जगाई थी। लेकिन वहां लगातार सत्ता संघर्ष, विपक्षी दलों के बीच अविश्वास और चुनावी प्रक्रिया पर सवालों ने संस्थाओं को खोखला बना दिया। जनता का भरोसा टूटने का नतीजा यही होता है कि लोकतंत्र केवल औपचारिकता रह जाता है और सड़क पर हिंसा ही असली राजनीति बन जाती है।इन हालातों की तुलना में भारत का लोकतंत्र और संविधान सबसे मजबूत उदाहरण बनकर सामने आता है। भारत ने भी संकटों का सामना किया है। 1975 का आपातकाल हमारे लोकतंत्र पर सबसे बड़ा हमला था। उस दौर में मौलिक अधिकार निलंबित कर दिए गए, मीडिया पर सेंसरशिप लगी और विपक्षी नेता जेल में ठूंस दिए गए। लेकिन वही संविधान, वही लोकतांत्रिक चेतना और वही जनता थी जिसने 1977 में इंदिरा गांधी को सत्ता से बाहर कर दिया। और जब जनता ने देखा कि नई सरकार उनकी उम्मीदों पर खरी नहीं उतर रही, तो 1980 में उन्होंने इंदिरा को फिर से बहुमत से सत्ता में वापस ला दिया। यही संविधान की खूबसूरती है कि वह न केवल नेताओं को उनकी सीमा दिखाता है, बल्कि जनता को भी सही रास्ता चुनने की ताकत देता है।भारत की न्यायपालिका इस संविधान की सबसे बड़ी प्रहरी रही है। 1990 में मंडल कमीशन का मामला जब देशभर में हिंसा का कारण बना, तब सुप्रीम कोर्ट ने नौ जजों की पीठ बनाकर यह स्पष्ट किया कि आरक्षण पचास प्रतिशत से ज्यादा नहीं होगा और 'क्रीमी लेयर' को बाहर रखा जाएगा।

एसआईआर पर कड़ी नज़र रखें : अभिषेक

निज संवाददाता

तृणमूल कांग्रेस के राष्ट्रीय महासचिव अभिषेक बनर्जी ने कहा है कि पार्टी राज्य में होने वाले एसआईआर पर कड़ी नज़र रखेगी। उन्होंने कैमक स्ट्रीट स्थित अपने कार्यालय में पार्टी के सुंदरवन सांगठनिक जिले के साथ बैठक की। इस मौके पर उन्होंने जिला नेतृत्व को एसआईआर पर कड़ी नज़र रखने को कहा। बैठक में पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष सुब्रत बख्शी भी मौजूद थे। इसके साथ ही अभिषेक ने यह भी स्पष्ट संदेश दिया कि मतदाता सूची का काम ठीक से किया जाना चाहिए।तृणमूल अखिल भारतीय महासचिव ने कहा है कि मतदाता सूची पर नज़र रखते हुए काम जारी रखा जाना चाहिए ताकि एक भी वैध मतदाता छूट न जाए। कुछ इलाकों में कई विवाद सामने आए हैं। खासकर गोसाबा में, यह मुद्दा कई बार चर्चा में रहा है। अभिषेक ने कहा है कि इसके लिए गोसाबा में एक कोर कमेटी बनाई जाएगी।इस दिन की बैठक में पार्टी के सभी कार्यकर्ताओं को हर क्षेत्र में मिलकर काम करने का संदेश दिया गया। इसी के साथ, हारे हुए बूथों को लेकर डायमंड हार्बर से सांसद अभिषेक ने कहा कि उन बूथों पर अभी से काम करना होगा। इस बात पर बारीकी से नज़र रखने की ज़रूरत है कि हार कहां और क्यों हुई।

तकनीकी नवाचार से सृजित हो रहे रोजगार, हरित मध्यप्रदेश का संकल्प हो रहा साकार

धर्मेंद्र पाण्डेय, वरिष्ठ चिंतक

भोपाल : महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी योजना (मनरेगा) भारतीय ग्रामीण अर्थव्यवस्था को सशक्त करने की दिशा में एक क्रांतिकारी पहल सिद्ध हुई है। आरंभ में यह योजना ग्रामीणों को वर्ष में सौ दिनों का रोजगार सुनिश्चित करने के उद्देश्य से लागू की गई थी, लेकिन आज समय के साथ इसका दायरा और प्रभाव क्षेत्र दोनों ही उल्लेखनीय रूप से विस्तृत हुए हैं।यशस्वी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी के मार्गदर्शन और मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व में मनरेगा अब प्रदेश में सतत विकास, पर्यावरण संरक्षण और सामुदायिक सहभागिता का एक प्रभावी माध्यम बन चुकी है।इस योजना की विस्तारित

भूमिका का जीवंत उदाहरण खरगोन जिले की ग्राम पंचायत थिबगांव है, जहां मनरेगा अंतर्गत 51 लाख पौधों का रोपण कर एक सघन और समृद्ध वन का निर्माण किया गया है। यह परियोजना ''हरित मध्यप्रदेश'' के संकल्प को साकार करने की दिशा में एक प्रेरणास्पद पहल है।वन निर्माण में विश्व प्रसिद्ध जापानी मियावाकी तकनीक का उपयोग किया गया, जो कम समय में अधिक घनत्व वाले और दीर्घकालिक स्थायित्व वाले वनों के निर्माण में सहायक है। पारंपरिक पौधरोपण की तुलना में यह तकनीक अधिक प्रभावी एवं पर्यावरण अनुकूल सिद्ध हो रही है।पौधों की समुचित देखभाल और सिंचाई हेतु ड्रिप इरीगेशन तथा सीपीटी (कैपिलरी पाइप टेक्नोलॉजी) जैसी आधुनिक तकनीकों का प्रयोग किया गया है। इससे एक ओर जहां जल संरक्षण संभव हुआ है, वहीं दूसरी ओर पौधों की वृद्धि अधिक संतुलित और सशक्त हुई है।इस अभिनव प्रयास ने पर्यावरण संतुलन को सुदृढ़ करने के साथ-साथ स्थानीय ग्रामीणों के लिए स्थायी रोजगार और आत्मगौरव का स्रोत भी प्रदान किया है। ग्रामीणों ने इसे केवल आर्थिक लाभ के रूप में नहीं देखा, बल्कि इसे अपनी मिट्टी और भावी पीढ़ियों के प्रति एक उत्तरदायित्व के रूप में अपनाया है।भारत सरकार ने इस उत्कृष्ट कार्य की सराहना करते हुए इसे राष्ट्रीय डॉक्यूमेंट्री में स्थान दिया है। यह उपलब्धि न केवल थिबगांव या मध्यप्रदेश की, बल्कि पूरे देश के लिए प्रेरणास्रोत है। यह उदाहरण सिद्ध करता है कि यदि योजनाओं का क्रियान्वयन दूरदर्शिता और जनभागीदारी के साथ किया जाए, तो वे बहुआयामी लाभ दे सकती हैं।मनरेगा अब केवल एक ''रोजगार गारंटी योजना'' नहीं रही, बल्कि यह एक हरित क्रांति का स्वरूप ले चुकी है। यह पहल ग्रामीण विकास, जल संरक्षण, जैव विविधता के संरक्षण तथा स्थानीय अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ करने की दिशा में अहम भूमिका निभा रही है। यह स्पष्ट है कि जब विकास की गति में पर्यावरण और रोजगार के तत्वों को समान रूप से समाहित किया जाता है, तब समृद्धि का एक नया मॉडल जन्म लेता है।मनरेगा के माध्यम से मध्यप्रदेश में जो हरित क्रांति प्रारंभ हुई है, वह न केवल राज्य के लिए, बल्कि संपूर्ण भारत के लिए सतत विकास का एक अनुकरणीय उदाहरण बन चुकी है। ''हरियाली ही समृद्धि की नींव है।'' यह अब केवल एक नारा नहीं, बल्कि सच्चाई बन चुका है।

'सांगठनिक ताकत भाजपा को बंगाल में दिला सकती है सत्ता'

प्रसिद्ध उद्यमी अनिल गोयल से गंभीर समाचार की विशेष बातचीत

पूरे बंगाल में भाजपा जिस तरह से एक मजबूत विपक्ष के रूप में उभर रही है वैसे में आम जनता के मन में यह सवाल बार-बार उठ रहा है कि क्या वर्ष 2026 के बंगाल विधानसभा चुनाव में सत्ता परिवर्तन के आसार हैं? इसी परिप्रेक्ष्य में भाजपा के वरिष्ठ कार्यकर्ता और हावड़ा जिला में अपनी प्रभावी उपस्थिति रखने वाले प्रसिद्ध उद्यमी अनिल गोयल से 'गंभीर समाचार' की ओर से अंशुमान भारती ने विभिन्न विषयों पर बात की। उनसे यह जानने का प्रयास किया गया कि क्या आगामी विधानसभा चुनाव में राज्य में सत्ता परिवर्तन का दावा सच साबित होगा। इसके लिए भाजपा की आगामी रणनीति क्या होगी? साथ ही भाजपा की अंदरुनी कलह तथा उसकी मजबूत उपस्थिति के पीछे के कारणों पर विस्तार से गोयल ने प्रकाश डाला। उनका मानना है कि पार्टी की सांगठनिक ताकत बंगाल में भाजपा को सत्ता के द्वार तक पहुंचा सकती है। प्रस्तुत हैं बातचीत के प्रमुख अंश।

प्र.- भाजपा के साथ आप कब से जुड़े हैं?

उत्तर : भाजपा के साथ मेरा जुड़ाव बचपन से है। चौथी कक्षा से ही संघ के कार्यक्रमों में मेरी सक्रिय भागीदारी थी। आज भी सामाजिक सांस्कृतिक व राजनीतिक रूप से पूरी तरह से मैं भारतीय जनता पार्टी व उसकी विचारधारा के प्रति मेरा जुड़ाव उसी तरह से है।

प्र.- अपने राजनीतिक जीवन के बारे में बताइये।

उत्तर : मेरा राजनीतिक जीवन कुछ इस तरह से रहा है कि मैंने जब से होश संभाला है तब से लगातार भाजपा के लिए काम किया है। मुझे याद है कि जब तपन सिकदर भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष थे, उस समय भी उनके साथ पार्टी के कार्यक्रमों में मेरी सक्रिय भागीदारी रहती थी। कई बार तो उनको मुरलीधर सेन लेन से हमलोग हावड़ा में बस से लेकर आते थे। उस समय की बात कुछ और थी। एक उद्यमी होने के साथ राजनीतिक रूप से आज भी मेरी सक्रियता यथावत है। वैसे वर्ष 1992 से मैं सक्रिय राजनीति में हूं। उस समय अंबुज शर्मा भाजपा से उम्मीदवार हुआ करते थे। उनके चुनाव प्रचार में मैं पूरी तरह से जुड़ा था।

प्र.- आपने तृणमूल कांग्रेस क्यों नहीं चुना?

उत्तर : कोई भी पार्टी दोष-गुण रहित नहीं है। लेकिन भाजपा व अन्य पार्टियों में प्रमुख अंतर यही है कि यह पार्टी स्वार्थ की राजनीति नहीं करती। आज भी जो लोग भाजपा से जुड़े हैं वे समर्पित कार्यकर्ता हैं। इसके साथ ही भाजपा ही पूरे देश में एकमात्र ऐसी पार्टी है जो भाई-भतीजावाद में लिप्त नहीं है। जो लोग संगठन से जुड़े हैं, उनमें देशप्रेम व राष्ट्रभक्ति की भावना है।

प्र.- बंगाल में भाजपा का क्या भविष्य है?

उत्तर : बंगाल में भाजपा का जनाधार लगातार बढ़ा है। कभी पांच प्रतिशत से आज यह 39 प्रतिशत तक पहुंच गई है। बंगाल में लोग बदलाव चाहते हैं। जिस तरह से वर्ष 2021 में भाजपा कार्यकर्ताओं की हत्याएं हुई उससे यह स्पष्ट है कि सत्ता पक्ष के लोग भयभीत हैं। कम्युनिस्ट शासन को भी लोगों ने देखा है। बंगाल में भाजपा का भविष्य उज्ज्वल है। आने वाले समय में भाजपा ही सत्ता की दावेदार है। पार्टी अभी तक जनता के पास ठीक तरह से नहीं पहुंच सकी है। भाजपा को सांगठनिक रूप से मजबूत होने की जरूरत है। यही एकमात्र उपाय है जिससे पार्टी को सत्ता तक पहुंचने में सफलता मिल सकती है।

प्र.- प्रदेश भाजपा के वरिष्ठ नेताओं के साथ आपके संबंध कैसे हैं?

उत्तर : देखिए मैं स्वयं भी भाजपा हावड़ा जिला का उपाध्यक्ष रहा हूं। प्रदेश भाजपा के सारे नेताओं के साथ मेरे संबंध अच्छे हैं। तपन सिकदर व दिलीप घोष से लेकर शमिक भट्टाचार्य सभी के साथ मेरे अच्छे संबंध हैं। विधानसभा में विपक्ष के नेता शुभेंदु अधिकारी भी मेरे अच्छे मित्र हैं। पार्टी के भीतर गुटबाजी की खबरें निराधार हैं। पूरी पार्टी इस बार राज्य में परिवर्तन के लिए तैयारी कर रही है। इसका परिणाम आगामी चुनाव में देखने को मिलेगा।

प्र.- अगर बंगाल में पार्टी सत्ता में आती है तो मुख्यमंत्री का चेहरा कौन होगा?

उत्तर : देखिए भाजपा कैडर आधारित पार्टी है। इसीलिए सारे नेता मिलकर चुनाव लड़ेंगे। पार्टी का फैसला ही अंतिम निर्णय होगा। दिल्ली में रेखा गुप्ता, मध्यप्रदेश में मोहन यादव तथा हरियाणा में नायब सिंह सैनी अच्छी तरह से सरकार चला रहे हैं। इसीलिए मुख्यमंत्री का चेहरा असली मुद्दा नहीं है। असली मुद्दा गुंडागर्दी है, जिसके खिलाफ बंगाल की जनता परिवर्तन चाहती है।

कम उपयोग की जाने वाली जमीन को मुक्त करने की दिशा में एक बड़ा कदम

ये जमीनें बनेंगी हाउसिंग और रियल एस्टेट-बंगाल कैबिनेट ने दी मंजूरी

निज संवाददाता

बंगाल की कैबिनेट ने बीते दिनों एक अहम नीति को मंजूरी दी है। इस नीति के तहत गैर-आवासीय प्लॉट को रियल एस्टेट और हाउसिंग में बदलने की अनुमति दी गई है। बंगाल सरकार का यह कदम राज्य में कम उपयोग की जाने वाली जमीन को मुक्त करने की दिशा में एक बड़ा कदम माना जा रहा है।राज्य विधानसभा में मुख्यमंत्री ममता बनर्जी की अध्यक्षता में हुई कैबिनेट ने इस नई नीति को मंजूरी दी है, जो शहरी विकास और नगरपालिका विभाग के अधीन आने वाले गैर-आवासीय प्लॉट पर लागू होगी।एक अधिकारी ने बताया कि दशकों पहले खाली पड़ी जमीन में से कई प्लॉट औद्योगिक इकाइयों को कर्मचारियों के लिए आवास के

लिए दिए गए थे। ये आवास अक्सर 99 साल या उससे ज्यादा समय के लिए दिए जाते थे, लेकिन अब इसका एक बड़ा हिस्सा इस्तेमाल नहीं किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि मंजूर की गई नई नीति के तहत सरकार की तरफ से तय की जाने वाली फीस के आधार पर इन प्लॉट को बदलने की प्रक्रिया शुरू होगी। उन्होंने कहा कि फीस संरचना और उसके कार्यान्वयन की विस्तृत गाइडलाइन आने वाले कुछ हफ्तों में जारी कर दी जाएगी।इस आवास नीति के अलावा कैबिनेट ने कई अन्य प्रस्तावों को भी मंजूरी दी है, जिसमें प्रशासन, स्वास्थ्य सेवा, शिक्षा और सांस्कृतिक धरोहर के विकास को लेकर कई प्रस्ताव शामिल हैं। प्रशासनिक ढांचे को मजबूत करने के लिए सरकार अलग-अलग विभागों में 18 नए पदों की भर्ती निकालेगी, जिसमें वित्त, मत्स्य पालन और महिला एवं बाल विकास विभागों के साथ-साथ राज्यपाल कार्यालय में दो अस्थायी वरिष्ठ स्तर के विशेष कार्य अधिकारी (ओएसडी) के पद शामिल हैं।अधिकारी ने बताया कि कैबिनेट ने 11 सरकारी मेडिकल कॉलेजों में बड़े पैमाने पर नर्सिंग स्टाफ की भर्ती को भी मंजूरी दी है। इसके अलावा, उत्तर और दक्षिण दिनाजपुर और जलपाईगुड़ी सहित कुछ जिलों में राजबंशी और कामतापुरी भाषाओं में प्राथमिक शिक्षा शुरू करने की भी मंजूरी दी गई है। अधिकारी ने बताया कि शुरुआत में सिर्फ 12 पैरा-शिक्षकों की नियुक्ति की जाएगी, जिनमें से 10 कामतापुरी माध्यम के स्कूलों में और दो राजबंशी स्कूलों में होगी।अधिकारी ने बताया कि सांस्कृतिक धरोहर के विकास के लिए सरकार ने रामकृष्ण और शारदा देवी के जन्मस्थानों से जुड़े क्षेत्रों के लिए एक विकास बोर्ड के गठन को भी मंजूरी दी है। यह बोर्ड विशेष परियोजनाओं के जरिए उन ऐतिहासिक क्षेत्रों में इंफ्रास्ट्रक्चर और सांस्कृतिक धरोहर संरक्षण के कार्यों की देखरेख करेगा।

डॉक्टरों की आत्महत्या रोकने को शुरू हुआ हेल्पलाइन

निज संवाददाता : इंडियन जर्नल ऑफ साइकियाट्री के अनुसार, 2016 से मार्च 2019 के बीच तीस डॉक्टरों की आत्महत्याएं दर्ज की गई हैं। इनमें से 18 पुरुष और 12 महिलाएं हैं। बीते बुधवार को विश्व आत्महत्या रोकथाम दिवस पर डॉक्टरों की आत्महत्या रोकने के लिए हेल्पलाइन शुरू किया गया। इसके तहत किरण-1800-599-0019, आसरा-+91 98204 66726, स्नेही-+9195822 11213, आईकॉल--+91 91529 87821 नंबर जारी किए गए। हर नंबर पर कॉल करके लोगों को काउंसलिंग का लाभ मिलेगा। गौरतलब है कि बंगाल में डॉक्टरों की आत्महत्या की संख्या भी बढ़ रही है। पिछले जून में डॉक्टर प्रलॉय बसु ने बेहाला स्थित अपने घर पर आत्महत्या कर ली थी। झाड़ग्राम की डॉक्टर दीप्रा भट्टाचार्य ने 2024 के अंत में आत्महत्या कर ली।

74 वर्ष की उम्र, कांपते हाथों से दुर्गा प्रतिमा बनाने में जुटे सुंदरवन के मूर्ति कलाकार

निज संवाददाता : काकद्वीप के प्रसिद्ध कलाकार निमाई पाल लगभग 50 वर्षों से मूर्तियाँ बना रहे हैं। अब उनकी आयु 74 वर्ष हो चुकी है। शरीर कमज़ोर होने के बावजूद, उन्होंने अपने काम से संन्यास नहीं लिया है। कांपते हाथों के बावजूद, वे दुर्गा प्रतिमाएँ बनाते रहते हैं। काकद्वीपवासियों के अनुसार, निमाई बाबू के हाथों के स्पर्श मात्र से देवी-देवताओं की मूर्तियाँ जीवंत हो उठती हैं। यह कलाकार कभी कोलकाता के कालीघाट में मूर्तियाँ बनाया करते थे। वे लगभग 12 वर्षों से काकद्वीप में काम कर रहे हैं। एक समय में, उनकी बनाई दुर्गा मूर्तियाँ विदेशों में जाती थीं। फिर वे बहुत प्रसिद्ध हो गए। परिवार के दबाव में घर लौटने के बाद, वे आज भी काकद्वीप के रथतला में मूर्तियाँ बना रहे हैं। इस वर्ष उन्हें 16 दुर्गा प्रतिमाओं के ऑर्डर मिले हैं। अब वे रात में काम में व्यस्त

रहते हैं। काकद्वीप की एक दुर्गा पूजा समिति के पदाधिकारी अशोक मिश्रा ने बताया कि मैंने बचपन से ही निमाई बाबू को मूर्तियाँ बनाते देखा है। उनके कुशल हाथों के स्पर्श से देवी को एक नया रूप मिलता है। उम्र उन्हें रोक नहीं पाती। हर साल वह दर्शकों के सामने अलग-अलग रूपों में दुर्गा की मूर्ति तैयार करते हैं। इस क्षेत्र में उनकी कला की खूब सराहना होती है।कलाकार ने कहा, फिलहाल मैं सुंदरवन क्षेत्र की पूजाओं के लिए मूर्तियाँ बनाता हूँ। अब मूर्तियों का प्रकार काफी बदल गया है। पहले मैं अपने मन के अनुसार मूर्तियाँ बनाता था। लेकिन अब पूजा समितियाँ मुझे मोबाइल पर चित्र दिखाकर मूर्तियाँ बनाने के लिए कहती हैं। अब थीम आधारित मूर्तियों की माँग भी बढ़ गई है। मुझे उसी माँग के अनुसार मूर्तियाँ बनानी पड़ती हैं।

मध्यप्रदेश में पर्यटन और होम स्टे टूरिज्म का नया दौर

बदलाव की बयार बनी समृद्धि का आधार

अजय कुमार मोहता
(संपादक)

भोपाल : मध्यप्रदेश प्राकृतिक सौंदर्य, सांस्कृतिक धरोहरों और ऐतिहासिक स्थलों से परिपूर्ण एक अद्भुत राज्य है। नर्मदा की पावन धारा, सतपुड़ा और विंध्य की पर्वतमालाएं, घने जंगल, वन्य जीव अभयारण्य और विविध जनजातीय संस्कृति इसे देश के सबसे आकर्षक पर्यटन स्थलों में शामिल करते हैं। इन सबका पूर्ण दोहन और व्यापक प्रचार-प्रसार पिछले कुछ वर्षों में संभव हो सका है।मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व में प्रदेश में पर्यटन क्षेत्र को एक नई दिशा और गति मिली है। उनकी दूरदर्शी सोच, नवाचारों के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण और स्थानीय भागीदारी को बढ़ावा देने की नीति ने प्रदेश को देश और दुनिया के पर्यटन मानचित्र पर और अधिक मजबूती से स्थापित किया है।पर्यटन को मिली नई पहचानमुख्यमंत्री डॉ. यादव ने पर्यटन को सिर्फ एक उद्योग के रूप में नहीं, बल्कि प्रदेश के आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक विकास का माध्यम माना है। उन्होंने पर्यटन को ग्रामीण विकास, महिला सशक्तिकरण और युवा रोजगार से जोड़ने की नीति अपनाई।राज्य सरकार द्वारा प्रदेश के प्रमुख पर्यटन स्थलों जैसे खजुराहो, उज्जैन, सांची, मांडू, भीमबेटका, पचमढ़ी, कान्हा, बांधवगढ़ और अमरकंटक को अंतर्राष्ट्रीय स्तर के पर्यटन केंद्र के रूप में विकसित किया जा रहा है। अधोसंरचना विकास, सड़क और परिवहन व्यवस्था, डिजिटल प्रचार और पर्यटकों की सुरक्षा जैसे पहलुओं पर विशेष ध्यान दिया गया है।होम स्टे टूरिज्म : ग्रामीण क्षेत्रों में नई संभावनाएंमुख्यमंत्री डॉ. यादव की सबसे क्रांतिकारी पहल रही है होम स्टे टूरिज्म मॉडल का प्रोत्साहन। इस योजना के तहत ग्रामीण क्षेत्रों में स्थानीय लोगों को अपने घरों में पर्यटकों को ठहराने की सुविधा देने के लिए प्रशिक्षित और प्रोत्साहित किया जा रहा है। इससे एक ओर जहां पर्यटकों को ग्रामीण जीवनशैली, भोजन, परंपराओं और संस्कृति को नजदीक से अनुभव करने का मौका मिल रहा है, वहीं दूसरी ओर स्थानीय लोगों को घर बैठे रोजगार और आय का नया स्रोत मिल रहा है। प्रदेश सरकार द्वारा ''होम स्टे योजना'' के अंतर्गत पंजीकरण प्रक्रिया को सरल किया गया है, आर्थिक सहायता और ऋण सुविधा भी दी जा रही है। इससे सैकड़ों ग्रामीण परिवार सीधे पर्यटन गतिविधियों से जुड़ चुके हैं। आदिवासी अंचलों में तो यह योजना एक सामाजिक क्रांति बनकर उभरी है, जहां पहले रोजगार के अवसर सीमित थे।युवाओं और महिलाओं के लिए सुनहरा अवसरहोम स्टे टूरिज्म ने विशेष रूप से युवाओं और महिलाओं के लिए आत्मनिर्भरता के द्वार खोले हैं। युवा स्थानीय गाइड, सांस्कृतिक प्रस्तुति आयोजक, ट्रेकिंग व नेचर वॉक गाइड, और फोटोग्राफी व वीडियो ब्लॉगिंग जैसे नए करियर विकल्पों में आगे आ रहे हैं। वहीं महिलाएं पारंपरिक व्यंजन, हस्तशिल्प, लोककला और सजावट के माध्यम से न केवल घर की अर्थव्यवस्था में योगदान दे रही हैं, बल्कि आत्मविश्वास से भरपूर नई पहचान भी बना रही हैं।पर्यावरणीय और सांस्कृतिक संरक्षण को बढ़ावाहोम स्टे टूरिज्म केवल आर्थिक गतिविधि नहीं, बल्कि पर्यावरणीय और सांस्कृतिक संरक्षण का भी माध्यम बन चुका है। पर्यटक जब किसी ग्रामीण क्षेत्र में ठहरते हैं, तो वहां की पारंपरिक जीवनशैली, स्थानीय खानपान, जैविक खेती, कारीगरी और पारंपरिक निर्माण शैली को आत्मसात करते हैं। इससे स्थानीय लोग अपनी परंपराओं पर गर्व महसूस करते हैं और उन्हें संरक्षित रखने के लिए प्रेरित होते हैं।उत्सव और सांस्कृतिक कार्यक्रमों का विस्तारमुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व में पर्यटन को स्थानीय त्योहारों और सांस्कृतिक कार्यक्रमों से भी जोड़ा गया है। मालवा उत्सव, नर्मदा महोत्सव, खजुराहो डांस फेस्टिवल, सिंहस्थ, मांडू उत्सव, और आदि महोत्सव जैसे आयोजनों ने प्रदेश को सांस्कृतिक पर्यटन का भी केंद्र बना दिया है। इन कार्यक्रमों में देश-विदेश से पर्यटक आते हैं, जिससे स्थानीय अर्थव्यवस्था को मजबूती मिलती है।डिजिटल प्रचार और स्मार्ट टूरिज्ममध्यप्रदेश सरकार ने डिजिटल तकनीक का भी व्यापक उपयोग कर पर्यटकों को आकर्षित किया है। ''एमपी टूरिज्म'' का पोर्टल और मोबाइल ऐप के माध्यम से पर्यटक अब सुविधाजनक तरीके से होटलों की बुकिंग, गाइड सेवाएं, ट्रैवल प्लानिंग और होम स्टे का लाभ उठा सकते हैं।वर्चुअल टूर, ई-ब्रॉशर, सोशल मीडिया कैंपेन और वीडियो डॉक्यूमेंट्री के माध्यम से प्रदेश की छवि को वैश्विक मंच पर प्रस्तुत किया गया है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव के नेतृत्व में मध्यप्रदेश ने पर्यटन विकास की दिशा में जो कदम उठाए हैं, वे न केवल राज्य की आर्थिक उन्नति में सहायक हैं, बल्कि सामाजिक समरसता, सांस्कृतिक संरक्षण और ग्रामीण विकास के भी सशक्त माध्यम बने हैं।होम स्टे टूरिज्म ने एक ऐसी तस्वीर पेश की है, जिसमें आत्मीयता, आत्मनिर्भरता और आत्मगौरव का समावेश है। यह न केवल पर्यटकों को अद्वितीय अनुभव प्रदान करता है, बल्कि प्रदेश के हर कोने को विकास की मुख्यधारा से जोड़ने का माध्यम बन रहा है। निश्चित रूप से यह मॉडल अन्य राज्यों के लिए भी एक प्रेरणा स्रोत है।

बांग्लादेश सीमा के साथ सटे जिलों में तेजी से बढ़ रहे नए वोटर्स

- तीन महीने में हुई 9 गुना की बढ़ोत्तरी
- 100 आवेदन की जगह अब बढ़कर करीब 900 प्रति माह तक पहुंची

निज संवाददाता : राज्य के मुख्य निर्वाचन अधिकारी (सीईओ) कार्यालय ने खुलासा किया है कि पिछले तीन महीनों में बंगाल के सीमा से सटे जिलों में नए मतदाता पंजीकरण (फॉर्म-6) में भारी उछाल देखा गया है। विशेष रूप से उत्तर और दक्षिण 24 परगना, नदिया, मुर्शिदाबाद और मालदा जैसे अल्पसंख्यक बहुल जिलों में यह बढ़ोतरी नौ गुना तक दर्ज की गई है। जानकारी के मुताबिक, पहले जहां प्रति विधानसभा क्षेत्र लगभग 100 आवेदन आते थे, वहीं अब यह संख्या बढ़कर करीब 900 प्रति माह तक पहुंच गई है।सीईओ कार्यालय के एक वरिष्ठ अधिकारी ने बताया कि उत्तर और दक्षिण 24 परगना, नदिया, उत्तर दिनाजपुर, मुर्शिदाबाद, मालदा और कूचबिहार जैसे सभी सीमावर्ती जिलों में फॉर्म-6 के जरिए नए वोटरों के नाम जुड़ने की दर तेज हो गई है। गौरतलब है कि ये जिले बांग्लादेश की सीमा से लगे हुए हैं। बीजेपी लंबे समय से इन क्षेत्रों में जनसंख्या संतुलन में बदलाव की शिकायत करती रही है। अब नए आंकड़े सामने आने के बाद यह मामला फिर से राजनीतिक बहस का विषय बन सकता है।

ग्रामीण इलाकों की तुलना में शहरी क्षेत्रों में मतदान प्रतिशत कम रहने की समस्या को देखते हुए निर्वाचन आयोग ने कोलकाता सहित शहरी जिलों में नई पहल शुरू करने का निर्णय लिया है। सीईओ कार्यालय के अनुसार, अब कोलकाता और अन्य जिलों की हर उस ऊंची इमारत (हाई-राइज बिल्डिंग) में मतदान केंद्र बनाए जाएंगे, जहां कम से कम 600 लोग रहते हैं। मुख्य निर्वाचन अधिकारी मनोज अग्रवाल ने कहा कि चुनाव आयोग ने हमें इस दिशा में कदम उठाने के निर्देश दिए हैं। दिल्ली विधानसभा चुनाव में इस प्रयोग को आजमाया गया था और वहां मतदान प्रतिशत में सुधार हुआ था। अब इसे पश्चिम बंगाल विधानसभा चुनाव में भी लागू किया जाएगा।

परफेक्ट फैशन रनवे पर बालाओं का प्रदर्शन

निज संवाददाता : एडी एंड एबी द्वारा पेश परफेक्ट फैशन रनवे के चकाचौंध कार्यक्रम में मिस, मिसेज और ब्वॉयज रैंप पर चलकर शानदार प्रदर्शन किया। लगभग 30 प्रतिभागियों ने संगीत की धुन पर मॉडलिंग का प्रदर्शन कर अवॉर्ड हासिल किया। कार्यक्रम में खास आकर्षण देवी स्वरूप संवरी बालाएं थीं, जिन्होंने देवी के खास अंदाज में प्रदर्शन कर लोगों का मन मोह लिया। काली, दुर्गा, लक्ष्मी और सरस्वती के रूप में बालाओं ने प्रदर्शन कर दर्शकों में आस्था जगा दी। फैशन कोरियोग्राफर अनिर्बान दे और मॉडल व एक्टर आकाश भारती ने बताया कि युवाओं में छुपी प्रतिभा को जगाने का मॉडलिंग एक सुनहरा अवसर है। मॉडलिंग से युवाओं को एक प्लेटफॉर्म मिल सकता है और आगे बढ़ सकते हैं।

दुर्गापूजा के दौरान बारिश का खतरा

डेंगू-मलेरिया से बचाव की आयोजकों को सलाह

- शहर के 1643 पूजा समितियों को भेजी जायेगी पंपलेट
- मंडप के बाँस के सिरों और तिरपाल की तहों में पानी जमने देने की दी गई सलाह

निजी संवाददाता: इस साल शहर में डेंगू और मलेरिया के मामले कम हैं। कोलकाता नगर निगम ने जागरूकता अभियान तेज़ कर दिए हैं। कथित तौर पर, नागरिक समाज का एक बड़ा वर्ग अभी भी सचेत नहीं हो रहा है। इस बार, नगर निगम अधिकारियों ने दुर्गा पूजा समितियों को त्योहारों के मौसम में डेंगू के प्रति सतर्क रहने की सलाह जारी की है। पिछले दिनों डिप्टी मेयर और स्वास्थ्य विभाग के मेयर परिषद अतिन घोष ने इसकी घोषणा की। उन्होंने पूजा समिति के पदाधिकारियों से यह सुनिश्चित करने को कहा कि मंडप के बाँस के सिरों और तिरपाल की तहों में पानी जमा न हो। उन्हें साफ़ भी करें। यह सलाह पहले ही छपवाकर नगर स्वास्थ्य अधिकारियों को भेजी जा चुकी है। वे इसे नगर के अनुसार विभिन्न पूजा समितियों को वितरित करेंगे। बताया जा रहा है कि यह सलाह शहर की 1,643 पूजा समितियों को भेजी जा रही है। हालाँकि, इस सूची में आवासीय पूजा या घर की पूजा शामिल नहीं है।नगरपालिका के अनुसार, पिछले साल (2024) 17 अगस्त तक शहर में डेंगू के मामलों की संख्या 291 थी। इस बार यह बढ़कर 343 हो गई है। नगर निगम के स्वास्थ्य अधिकारियों का कहना है कि यह डेंगू मच्छरों के प्रजनन का मौसम है।

पिछले कुछ हफ्तों से डेंगू के मामलों की संख्या लगातार बढ़ रही है। यह सामान्य है। हालांकि, पिछले कुछ हफ्तों से जो देखा गया है, वह यह है कि मामलों की संख्या पिछली बार की तुलना में कम है। इसके अलावा, दुर्गा पूजा के दौरान बारिश का अनुमान है। इसलिए, अगर मंडप में पानी जमा होता है, तो यह डेंगू के कीटाणुओं वाले मच्छरों के अंडे देने के लिए एक आदर्श वातावरण बन जाएगा। इसलिए, पूजा समितियों को मंडप के आसपास के क्षेत्र को साफ रखने के लिए कहा जा रहा है। इस स्थिति में, अतिन ने खुद कहा है कि वह विभिन्न पूजा मंडपों और परिसरों का दौरा करेंगे। आज, मंगलवार को, वह वार्ड नंबर तीन में गुरुद्वारा जाएंगे।

वह देखेंगे कि क्या वहां कोई जल जमाव है। फिर वह ताला पार्क प्रत्यय और बेलगछिया सर्वजनिन के मंडप का भी दौरा करेंगे। उप महापौर ने कहा कि हमें सावधान रहना होगा। जागरूकता जारी रहेगी। पूजा आयोजकों को भी ज़िम्मेदारी लेनी होगी। मंडप के आसपास कहीं भी पानी जमा नहीं होना चाहिए। जमा पानी में डेंगू के मच्छर पनपेंगे। उन पर नियंत्रण रखना होगा। ज़रूरत पड़ने पर सिर पर बांस का कपड़ा बांधना होगा ताकि पानी जमा न हो।

कचरा जमा हो तो किसी भी समय व्हाट्सएप पर नगर निगम को कर सकेंगे शिकायत

निज संवाददाता : कोलकाता नगर निगम ने मई-जून में कचरा सफाई के लिए एक विशेष अभियान चलाया था। उस सप्ताह भर के कार्यक्रम के दौरान, शहरवासियों को व्हाट्सएप पर सफाई संबंधी शिकायत करने का अवसर मिला था। उस कार्यक्रम के आधार पर, नगर निगम के अधिकारी एक रिपोर्ट तैयार करते हैं। किन इलाकों से ज़्यादा शिकायतें आ रही हैं, किस तरह की शिकायतों की पहचान की जाती है। अब नगर निगम चाहता है कि शहरवासियों को साल भर यह अवसर मिले। इसलिए, नगर निगम किसी भी समय जमा कचरे की तस्वीरें लेने और व्हाट्सएप पर शिकायत करने की आवश्यक व्यवस्था कर रहा है। यह सेवा अगले महीने, यानी

पूजा से पहले शुरू हो सकती है सेवा

पूजा से पहले शुरू हो सकती है।

28 मई से 3 जून तक एक सप्ताह तक स्वच्छता से संबंधित एक विशेष अभियान चलाया गया था। विश्व पर्यावरण दिवस से पहले इस कार्यक्रम को शहर में काफ़ी प्रतिक्रिया मिली थी। इससे उत्साहित होकर, नगर निगम के अधिकारियों ने साल भर एक व्हाट्सएप नंबर चालू रखने की योजना बनाई है। नगर पालिका के कचरा निष्कासन एवं ठोस अपशिष्ट प्रबंधन विभाग के एक अधिकारी ने बताया, 'हमारे कर्मचारी सुबह घर-घर जाकर कचरा इकट्ठा करते हैं। दोपहर या दोपहर में विभिन्न सड़कों और बाज़ार चौकों की भी सफाई की जाती है। लेकिन सुबह कचरा इकट्ठा होने के बाद, कई अनजान नागरिक दिन भर कचरा फेंकते रहते हैं। सप्ताह भर चले कार्यक्रम के दौरान ऐसी कई शिकायतें आईं। हमने उन्हें चार घंटे के भीतर साफ़ कर दिया। नतीजतन, हमें इस बात का मोटा अंदाज़ा है कि किस तरह की शिकायतें किन इलाकों से ज़्यादा आ रही हैं। अब इन सबको मिलाकर एक व्यवस्था शुरू की जा रही है।'

महापौर ने कहा, 'यह कैसे किया जाएगा इसका प्रारूप तैयार किया जा रहा है। शुरुआत में, यह निर्णय लिया गया है कि सुबह 10 बजे से शाम 5 बजे के बीच व्हाट्सएप नंबर पर शिकायतें दर्ज की जा सकेंगी। एक टीम नंबर की निगरानी करने, शिकायतों को एकत्र करने और उन्हें संबंधित बोरो या वार्ड कार्यालय या अधिकारी को भेजने का काम करेगी। हालांकि, जिस तरह से सुबह घर-घर से कचरा एकत्र किया जाता है, वह जारी रहेगा। समानांतर रूप से, यह प्रणाली पूरे वर्ष भी चालू रहेगी। नगरपालिका अधिकारियों ने कहा कि आवश्यक निर्देश संबंधित बोरो को नगरपालिका के केंद्रीय भवन से अधिकतम दो घंटे के भीतर भेजे जाएंगे। अगले दो घंटों के भीतर सफाई पूरी हो जाएगी और शिकायतकर्ता को फीडबैक भेजा जाएगा। पता चला है कि इस काम के लिए नगरपालिका की डिजिटल प्रणाली से एक टिकट नंबर जनरेट किया जाएगा।

कोलकाता में देश के सबसे बेहतरीन शौचालय

मोदी सरकार ने नगर निगम को दिया प्रमाण पत्र

निज संवाददाता : स्वच्छ भारत मिशन कार्यक्रम के तहत, कोलकाता के सार्वजनिक शौचालय देश में सर्वश्रेष्ठ हैं। केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय का प्रमाण पत्र अब नगर निगम के हाथ में है। महानगर में 478 सार्वजनिक शौचालय हैं। इनमें से लगभग 17 शौचालय केवल महिलाओं के लिए हैं। ये शौचालय निजी संस्थाओं की देखरेख में संचालित होते हैं।

कुछ महीने पहले, सार्वजनिक स्वास्थ्य मंत्रालय के अधिकारी शहर के सार्वजनिक शौचालयों की स्थिति का आकलन करने आए थे। उन्होंने स्वयं विभिन्न सार्वजनिक शौचालयों का दौरा किया। पिछले हफ़्ते, केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय ने नगरपालिका को ओडीएफ (खुले में शौच मुक्त) प्लस प्रमाण पत्र भेजा। इसका अर्थ है कि कोलकाता के किसी भी वार्ड में खुले में शौच नहीं किया जाता है। इतना ही नहीं, प्रमाण पत्र में यह भी कहा गया है कि नगर निगम का प्रत्येक शौचालय स्वच्छ है। किसी भी प्रकार की बीमारी फैलने की संभावना नहीं है।

नगर निगम सूत्रों के अनुसार, नगर निगम कोलकाता के पाँच मेडिकल कॉलेजों में सार्वजनिक शौचालय बनाएगी। इसके अलावा, ईएम बाईपास से कमालगाज़ी तक पूरी सड़क पर 9 नए शौचालय बनाए जाएँगे। इसके अलावा, कोलकाता के उत्तर से दक्षिण तक महिलाओं के लिए शौचालयों की संख्या बढ़ाई जाएगी। इसके लिए सरकारी ज़मीन की तलाश की जा रही है।

बंगाल में एसआईआर शुरू होने से पहले शोध में बड़ा दावा

पश्चिम बंगाल में 13.69 फीसद फर्जी मतदाता

निज संवाददाता : बंगाल में अगले साल यानी 2026 में विधानसभा चुनाव होना है। इसके लिए विभिन्न राजनीतिक दलों ने तैयारी शुरू कर दी है। ऐसे माहौल में देशभर में मतदाता सूची को लेकर राजनीतिक दलों के बीच चल रही बहस अब बंगाल तक पहुंच गई है। बिहार में चुनाव आयोग के विशेष मतदाता पुनरीक्षण अभियान (एसआईआर) के दौरान लाखों नाम काटे जाने के बाद अब पश्चिम बंगाल की मतदाता सूची पर भी सवाल खड़े हो गए हैं। विशेषज्ञों का मानना है कि राज्य की मतदाता सूची में करीब 13.69 फीसद नाम फर्जी या मृतकों के हैं।बिहार में 65 लाख से अधिक मतदाता सूची से हटाए जाने के बाद अब चुनाव आयोग ने संकेत दिया है कि पश्चिम बंगाल में भी एसआईआर अभियान चलाया जाएगा। हालांकि आयोग ने इस प्रक्रिया की समय-सीमा स्पष्ट नहीं की है। पश्चिम बंगाल में आखिरी बार मतदाता सूची का गहन पुनरीक्षण 2002 में हुआ था। बीते 22 वर्षों में इस सूची की ठीक से समीक्षा नहीं की गई, जिसके चलते मृतकों और डुप्लीकेट नामों को हटाया ही नहीं गया।अगस्त 2025 में प्रकाशित शोध 'पश्चिम बंगाल में मतदाता सूची में वृद्धिः वैध मतदाता गणना का जनसांख्यिकीय पुनर्निर्माण (2024)' में विद्यु शेखर (एसपी जैन, मुंबई) और मिलन कुमार (आईआईएम विशाखापत्तनम) ने बंगाल की मतदाता सूची का गहन विश्लेषण किया है। अध्ययन के अनुसार, 2024 की मतदाता सूची में करीब 1.04 करोड़ अतिरिक्त नाम मौजूद हैं। यह कुल सूची का लगभग 13.69 फीसद है। शोध में चेतावनी दी गई है कि यह आंकड़ा न्यूनतम है, वास्तविक संख्या इससे भी अधिक हो सकती है।शोध में दावा किया गया है कि बिहार की तरह पश्चिम बंगाल की मतदाता सूची में भी मृत लोगों के नाम बड़े पैमाने पर दर्ज हैं। 2004 की सूची में राज्य में 4.74 करोड़ मतदाता थे। बीस साल बाद प्राकृतिक मृत्यु दर और उम्र के आधार पर अनुमान लगाया गया कि इनमें से लगभग एक करोड़ लोग अब जीवित नहीं हैं। इसके बावजूद उनके नाम मतदाता सूची से हटाए नहीं गए हैं।अध्ययन के अनुसार, 1986 से 2006 के बीच जन्मे और 18 वर्ष की आयु पूरी करने वाले नए मतदाताओं को जोड़ने और प्रवासन को घटाने के बाद, 2024 में पश्चिम बंगाल में वैध मतदाताओं की संख्या करीब 6.57 करोड़ होनी चाहिए थी, लेकिन चुनाव आयोग के आंकड़ों में यह संख्या 7.61 करोड़ दर्ज है यानी करीब 1.04 करोड़ नाम अतिरिक्त पाए गए। यह अंतर चुनावी नतीजों पर बड़ा असर डाल सकता है।शोध में यह भी पाया गया कि अल्पसंख्यक बहुल इलाकों में मतदाता संख्या में असामान्य वृद्धि हुई है।

कई क्षेत्रों में मतदाता संख्या वास्तविक जनसंख्या से भी अधिक दर्ज की गई. साथ ही 2011 के बाद राज्य से होने वाले पलायन को भी सूची में नहीं जोड़ा गया, जबकि यह संख्या लगातार बढ़ रही है। अगर इसे शामिल किया जाता तो वैध मतदाताओं की संख्या और कम हो जाती।गौरतलब है कि बिहार के अनुभव को देखते हुए अब बंगाल में भी यह आशंका गहराने लगी है कि बड़े पैमाने पर मतदाता सूची से नाम हट सकते हैं। इससे राजनीतिक दलों के बीच टकराव और बढ़ सकता है। विपक्ष जहां इसे फर्जी वोटरों को बचाने की साजिश बताएगा, वहीं सत्तारूढ़ दल इसे लोकतंत्र की मजबूती और पारदर्शिता के लिए आवश्यक कदम करार दे सकता है।

उम्र-14 साल, रोज़ाना 3 किलो चावल, 3 दर्जन रोटियां!

जीशान की भूख मिटाने के लिए परिवार के छूटते हैं पसीने

- दुर्लभ बीमारी से पीड़ित है किशोर
- पिता पेशे से एक लकड़ी मजदूर

निज संवाददाता : वह रोजाना तीन किलो चावल खाता है। उम्र 14 साल। वज़न 140 किलो। ज़ीशान शेख कक्षा 9 का छात्र है। उसकी भूख को मिटाने के लिए परिवार को काफी जद्दोजहद करना पड़ता है। लेकिन वजह क्या है? दरअसल, किशोर ज़ीशान एक दुर्लभ बीमारी से पीड़ित है। पिता मुनसाद अली पेशे से लकड़ी मिल मजदूर हैं। अपनी अकेली कमाई से उन्हें एक तरफ अपने बेटे की भूख मिटानी पड़ती है, तो दूसरी तरफ उसका इलाज भी। उन्हें समझ नहीं आ रहा कि क्या करें। एक बार की बात है, बंगाल में लोकमान नाम का एक किशोर ऐसी ही एक दुर्लभ बीमारी से पीड़ित था। उसे बहुत भूख भी लगती थी। बाद में, उस लोकमान की असमय मृत्यु हो गई।

सागरदिघी के कबिलपुर गांव के मुनसाद के दो बेटे और एक बेटी है। ज़ीशान शेख, परिवार का सबसे छोटा बेटा है। उसका जन्म एक सामान्य बच्चे की तरह हुआ था। लेकिन जैसे-जैसे वह बड़ा होता गया, उसके शरीर का वजन असामान्य रूप से बढ़ने लगा। और उसकी भूख भी बढ़ गई। अब उसका वज़न 140 किलो हो गया है। ज़ीशान को रोज़ाना लगभग तीन किलो चावल चाहिए। अगर रोटी है, तो एक बार में तीन दर्जन। मछली, मांस या अंडे में से कुछ तो होना ही चाहिए। वरना बेचैनी होगी। इतना ही नहीं, उसके वज़न की वजह से किसी भी दुकान पर रेडीमेड कपड़े नहीं मिलते। दिन बीतते जा रहे हैं, ज़ीशान ठीक से चल भी नहीं पा रहा है। नतीजतन, वह लेटे-लेटे ही ज़िंदगी गुज़ारता है। वह घंटों गंगा नदी में गर्दन तक डूबा रहता है। भूख लगने पर घर आता है।

ज़ीशान के पिता मुनसाद ने कहा- 'मैं एक छोटी सी लकड़ी के मिल में दिहाड़ी मज़दूरी करता हूं। परिवार मेरी कमाई से चलता है। मैं अपने बेटे को ठीक से खाना नहीं दे पाता। मुझे समझ नहीं आ रहा कि वहां इस बीमारी का इलाज कैसे करूं और भविष्य में अपने बेटे को कैसे बचाऊं। डॉक्टरों ने उसे व्यायाम करने और टहलने को कहा है। उन्होंने उसे खाना कम करने की भी सलाह दी है। लेकिन बेटा उनकी एक भी नहीं सुनता। अगर उसे भरपेट खाना नहीं मिलता, तो वह घर पर ही जंग का मैदान बना लेता है।' जीशान ने कहा- 'मेरा पसंदीदा खाना बिरयानी और मीट है। मैं एक बार में तीन किलो मीट और दो किलो चावल की बिरयानी खा सकता हूं। कई लोग मेरा मज़ाक उड़ाते हैं। लेकिन मुझे खाना बहुत पसंद है। मुझे दिन में चार बार खाना पड़ता है।' जीशान की मां पियारुन बीबी ने कहा- 'मैं खुद दिल की मरीज़ हूं। कुछ दिन पहले मेरी बाईपास सर्जरी हुई है। मेरे पति मेरे और अपने बेटे के इलाज का खर्च उठाने के लिए संघर्ष कर रहे हैं। मेरी सरकार से अपील है कि मेरे बेटे की देखभाल करें और हो सके तो उसकी मदद करें। हमने तीन साल की उम्र में उसके असामान्य विकास पर ध्यान दिया था।

9 साल की उम्र से ही उसका कई जगहों पर इलाज चल रहा है, लेकिन यह ठीक नहीं हुआ है। जब उसे भूख लगती है, तो उसे समझ नहीं आता कि क्या करे। वह बहुत बेचैन हो जाता है। उसे खाना बहुत पसंद है। मैं एक मां हूं, और भले ही मैं खुद खाना न खाऊं, मैं उसके मुंह में खाना डाल देती हूं। लेकिन मुझे नहीं पता कि यह कब तक चलेगा।'

'गृहलक्ष्मी मिसेज इंडिया 2025' का ग्रैंड फिनाले संपन्न

निज संवाददाता : हिंदी पत्रिका 'गृहलक्ष्मी' ने सफलतापूर्वक 'गृहलक्ष्मी मिसेज इंडिया-2025' का ग्रैंड फिनाले आयोजित किया। यह शाम सुंदरता, प्रतिभा और सशक्तिकरण के उत्सव से भरी रही। आयोजन की शोभा बढ़ाने आईं ब्यूटी आइकन शहनाज हुसैन, जिन्होंने न सिर्फ अपनी उपस्थिति से प्रतिभागियों को प्रेरित किया, बल्कि सिल्वर, गोल्ड और एलीट कैटेगरी की विजेताओं को ताज पहनाकर इस क्षण को और भी खास बना दिया।इस खास शाम के लिए जूरी पैनल में अलग-अलग क्षेत्रों से जुड़ी विशिष्ट हस्तियां शामिल रहीं- डॉ. ब्लॉसम कोचरएरोमा थेरेपी की पायनियर, स्किनकेयर एक्सपर्ट और ब्लॉसम कोचर ग्रुप ऑफ कंपनीज़ की चेयरपर्सन, पवलीन गुर्जलएक्टर, एंकर और वेलनेस इंफ्लुएंसर, आशना मलानीलाइफस्टाइल इंफ्लुएंसर और डिजिटल मार्केटर, प्राची तेहलानएक्ट्रेस और भारतीय राष्ट्रीय खेल टीम की पूर्व कप्तान, श्याम शर्मामैनेजिंग पार्टनर, ग्लोबल लॉयर्स और डायरेक्टर, डीडीसीए, साहिल नायरसीईओ, मिला ब्यूटी। इनकी विशेषज्ञता और अनुभव ने प्रतियोगिता को और भी सशक्त और विश्वसनीय बना दिया।दीवा पेजेंट के डायरेक्टर्स अंजना और कार्ल मास्कारेनहास ने मेंटोर की भूमिका निभाई, जबकि कोरियोग्राफी पूजा सिंह द्वारा की गई। गृहलक्ष्मी मिसेज़ इंडिया 2025 के ग्रैंड फिनाले में अलग-अलग कैटेगरी की

विजेताओं को सम्मानित किया गया। सिल्वर कैटेगरी में डॉ. श्वेता कार्लापुडी विजेता बनीं, जबकि आरुषि मिश्रा पहली रनर-अप और मीनू सिंह दूसरी रनर-अप रहीं। गोल्ड कैटेगरी में अमृता कौर सोखी ने विजेता का खिताब अपने नाम किया, वहीं श्वेता वर्मा पहली रनर-अप और प्राजक्ता वैभव भोइर दूसरी रनर-अप बनीं। एलीट कैटेगरी में रेखा पलादी ने विजेता का ताज जीता, अनुपमा सिंह पहली रनर-अप और बबीता अमरोही दूसरी रनर-अप रहीं। इस अवसर पर गृहलक्ष्मी पत्रिका की प्रमुख संपादक वंदना वर्मा ने कहा-गृहलक्ष्मी मिसेज इंडिया-2025 सिर्फ सुंदरता की बात नहीं है, यह पहचान, साहस और सशक्तिकरण का मंच है।

संपादकीय

आजादी की आवाज क्यों बनी गुस्से की लहर?

लोकतंत्र में अभिव्यक्ति की आजादी को मौलिक अधिकार के रूप में परिभाषित किया गया है, जो हर नागरिक को बिना किसी दबाव और भेदभाव के अपनी राय एवं विचार व्यक्त करने की अनुमति देता है। इसमें बोलना, लिखना, कलाकारी और इंटरनेट का उपयोग करना जैसे विभिन्न रूप शामिल हैं। हालांकि, यह अधिकार असीमित नहीं है और दूसरों के अधिकारों का उल्लंघन करने, भेदभाव तथा हिंसा या नफरत को बढ़ावा देने जैसी गतिविधियों की सूरत में यह कानूनी तौर पर बंदिश के दायरे में आ सकता है। नेपाल में जो जन आक्रोश फूटा है, वह सोशल मीडिया पर पाबंदी और उससे अभिव्यक्ति की आजादी प्रभावित होने से ही प्रेरित है। वहां सड़कों पर लोगों के गुस्से की आग इस कदर भड़की कि इसकी लपटें प्रधानमंत्री आवास तथा राष्ट्रपति भवन और संसद भवन तक जा पहुंची। प्रदर्शनकारियों और सुरक्षाबलों के बीच हिंसक झड़पों में कई लोगों की जान भी चली गई। सवाल है कि आखिर नेपाल में ऐसे हालात क्यों बनने दिए गए? समय रहते प्रदर्शनकारियों से बातचीत कर उन्हें विश्वास में लेने के प्रभावी प्रयास क्यों नहीं किए गए? वैसे यह पहली बार नहीं है, जब किसी देश ने सोशल मीडिया पर पाबंदी लगाई हो। इससे पहले भी कई देश ऐसा कर चुके हैं, भले ही कारण अलग-अलग रहे हों। वर्ष 2009 में चीन के शिनजियांग प्रांत में हुए दंगों के बाद वहां की सरकार ने फेसबुक, एक्स और गूगल जैसे मंचों पर प्रतिबंध लगा दिया था। ऐसा इसलिए किया गया, ताकि देश में सोशल मीडिया और इंटरनेट पर सरकार विरोधी सामग्री के प्रसार पर रोक लगाई जा सके। ईरान में भी वर्ष 2009 से सोशल मीडिया मंचों पर पाबंदी लगी है। इसी तरह तुर्किये ने भी वर्ष 2014 में आतंकवाद के खिलाफ कार्रवाई और सुरक्षा के नाम पर सोशल मीडिया पर प्रतिबंध लगा दिया था। हालांकि वर्ष 2016 में लोगों के विरोध के कारण यह पाबंदी हटानी पड़ी। मिस्र में वर्ष 2011 में बड़े पैमाने पर प्रदर्शन हुए, जिसके बाद यहां सोशल मीडिया पर प्रतिबंध लगा दिया गया। यहीं नहीं पाकिस्तान में भी इस तरह के आंशिक प्रयास होते रहे हैं। इसमें दो राय नहीं कि सोशल मीडिया पर बिना किसी ठोस वजह से पूर्ण पाबंदी लगाने से अभिव्यक्ति की आजादी प्रभावित होती है। साथ ही आमजन के हितों पर भी गहरा असर पड़ता है। आज के दौर में सोशल मीडिया न केवल सूचना के प्रसार का एक बड़ा माध्यम बन गया है, बल्कि कुछ लोगों की आजीविका भी इस पर निर्भर करती है। मसलन, सोशल मीडिया पर विभिन्न तरह के वीडियो डालने और उनसे होने वाली कमाई। बढ़ती बेरोजगारी की वजह से कई लोगों ने इसे अपना व्यवसाय बना लिया है। ऐसे में अगर सरकार अचानक सोशल मीडिया पर प्रतिबंध लगा दें, तो जन आक्रोश की लहर उठना स्वाभाविक है। यह बात भी सच है कि सोशल मीडिया पर अनुचित सामग्री का दायरा बढ़ रहा है, इसलिए इसे विनियमित किए जाने की जरूरत महसूस की जा रही है।

शताब्दी वर्ष की यात्रा और समाज में सार्थक योगदान

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ
'समर्पण, अनुशासन और समावेशिता के माध्यम से विविधता में एकता : संघ की शताब्दी यात्रा'

डॉ. सत्यवान सौरभ

संगठन प्रमुख डॉ. मोहन भागवत के मार्गदर्शन में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने अपने शताब्दी वर्ष के अवसर पर दिल्ली के विज्ञान भवन में तीन दिवसीय व्याख्यानमाला का आयोजन किया। यह आयोजन केवल एक कार्यक्रम नहीं था, बल्कि संघ की विचारधारा, उसकी कार्यपद्धति और समाज-निर्माण यात्रा का जीवंत प्रदर्शन था। संघ का निर्माण भारत को केंद्र में रखकर हुआ और इसका उद्देश्य देश को विश्वगुरु बनाने में योगदान देना है। संघ की प्रार्थना 'भारत माता की जय' केवल शब्द नहीं, बल्कि कार्य और समर्पण की प्रेरणा है। संघ का निर्माण धीमी और सतत प्रक्रिया का परिणाम है, जो समय की कसौटी पर खरा उतरा।

संघ भले ही 'हिन्दू' शब्द का प्रयोग करता है, लेकिन इसका मर्म केवल धर्म तक सीमित नहीं है। इसमें समावेश, मानवता और राष्ट्र के प्रति जिम्मेदारी की भावना निहित है। संघ का उद्देश्य किसी विरोध या प्रतिस्पर्धा के लिए खड़ा होना नहीं, बल्कि समाज के प्रत्येक वर्ग को संगठित करके देश की एकता बनाए रखना है। संघ का कार्य स्वयंसेवकों के माध्यम से संचालित होता है और यह कार्य नए स्वयंसेवकों को प्रशिक्षण देने, उनमें नेतृत्व और जिम्मेदारी विकसित करने का अवसर प्रदान करता है। राष्ट्र की अवधारणा सत्ता या सरकार से परिभाषित नहीं होती। भारतीय परंपरा में राष्ट्र का अर्थ संस्कृति, आत्मचिंतन और सामाजिक चेतना से जुड़ा है। इतिहास की ओर देखने पर यह स्पष्ट होता है कि 1857 का स्वतंत्रता संग्राम असफल रहा, लेकिन इसने भारतीय समाज में नई चेतना और आत्म-जागरूकता को जन्म दिया। इसके बाद कांग्रेस का उदय हुआ, जिसने राजनीतिक समझ और सामाजिक सुधार का मार्ग प्रशस्त किया। स्वतंत्रता के बाद समाज में उपजी असमानताओं और कुरीतियों को दूर करने की चुनौती बनी रही। इसी आवश्यकता ने संघ की स्थापना और उसकी भूमिका को जन्म दिया।

डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार और अन्य महापुरुषों ने समाज के दुर्गुणों को दूर करने और संपूर्ण समाज के संगठन की आवश्यकता को पहचाना। 1925 में संघ की स्थापना इस दृष्टि से हुई कि समाज के नैतिक और सांस्कृतिक मूल्य मजबूत हों और राष्ट्र निर्माण में योगदान सुनिश्चित हो। 'हिन्दू' शब्द केवल धर्म नहीं, बल्कि जिम्मेदारी, समर्पण और समावेश का प्रतीक है। इसमें किसी को अलग करने या विरोध करने का भाव नहीं, बल्कि सबको जोड़ने और समाज को संगठित करने का उद्देश्य निहित है। भारत का स्वभाव सहयोग और समन्वय का है, संघर्ष का नहीं। उसकी एकता भूगोल, संसाधनों और आत्मचिंतन परंपरा में निहित है। बाहर की ओर देखने के बजाय भीतर झांकने पर यह स्पष्ट होता है कि सभी में एक ही तत्व है, चाहे वह अलग-अलग रूपों में क्यों न प्रकट हो। यही कारण है कि भारत माता और पूर्वज हमारे लिए पूजनीय हैं। जो व्यक्ति भारत माता और अपने पूर्वजों का सम्मान करता है, वही सच्चा हिन्दू है। शब्द बदल सकते हैं, लेकिन भक्ति और श्रद्धा की भावना समाज के प्रत्येक व्यक्ति को जोड़ती है।

समाज में धीरे-धीरे लोग संघ और हिन्दू शब्द के अर्थ को समझने लगे हैं। जीवन की गुणवत्ता बेहतर होने से लोग अपने मूल परंपराओं की ओर लौटते हैं। संघ किसी को हिन्दू होने के लिए बाध्य नहीं करता; उसका उद्देश्य समाज के समग्र संगठन और राष्ट्र निर्माण में योगदान देना है। संघ किसी धर्म, जाति या समूह के खिलाफ नहीं है, बल्कि समावेशी दृष्टि से सभी को जोड़कर समाज को संगठित करता है। संघ कार्य केवल संगठन तक सीमित नहीं है। उसका लक्ष्य समाज के प्रत्येक व्यक्ति के भीतर नैतिक, सांस्कृतिक और सामाजिक मूल्यों का विकास करना है। समाज में जागरूकता और अनुशासन लाना संघ का प्रमुख उद्देश्य है। संघ की कार्यपद्धति में व्यक्तिगत समर्पण और अनुशासन का विशेष महत्व है। प्रत्येक स्वयंसेवक संघ की मूल भावना और कार्य शैली को आत्मसात करता है और समाज में इसे लागू करता है। संघ का लक्ष्य यह है कि समाज में गुटबंदी न हो, बल्कि सभी को संगठित किया जाए और देश में एकता कायम रहे।

भारत की विविधता में एकता उसकी असली पहचान है। विभिन्न भाषा, धर्म, संस्कृति और परंपराओं के बावजूद भारत की पहचान उसकी आत्मा, संस्कृति और पूर्वजों के प्रति सम्मान में निहित है। संघ का उद्देश्य इस एकता को बनाए रखना और समाज के प्रत्येक व्यक्ति को इसमें सहभागी बनाना है। संघ का कार्य व्यक्ति निर्माण, समाज उत्थान और राष्ट्र निर्माण तीनों स्तरों पर कार्य करता है। संघ के माध्यम से समाज में नैतिक और सांस्कृतिक मूल्यों को मजबूत किया जा रहा है। संघ कार्यकर्ताओं के माध्यम से समाज में अनुशासन, समर्पण और सेवा भाव का संचार करता है। संघ का उद्देश्य केवल स्वयंसेवकों तक सीमित नहीं है, बल्कि समाज के प्रत्येक वर्ग तक इसका प्रभाव पहुंचाना है। संघ की कार्यशैली में व्यक्तिगत प्रयास और संगठनात्मक दृष्टि का संतुलन बना रहता है। संघ का लक्ष्य यह है कि समाज का प्रत्येक व्यक्ति अपने कर्तव्यों को समझे और राष्ट्र निर्माण में योगदान करे। व्याख्यानमाला ने संघ की स्थापना, हिन्दू शब्द के अर्थ, संगठनात्मक दृष्टि, समाज सेवा और राष्ट्र निर्माण की प्रक्रिया पर स्पष्ट प्रकाश डाला। संघ का उद्देश्य किसी के विरोध में नहीं, बल्कि समाज और राष्ट्र के उत्थान में योगदान देना है।

संघ की कार्यशैली, व्यक्तिगत समर्पण और संगठनात्मक दृष्टि समाज के लिए प्रेरणा स्रोत हैं। इस प्रकार, संघ शताब्दी वर्ष की यह व्याख्यानमाला समाज में संघ की भूमिका, उसकी कार्यप्रणाली और उद्देश्य को समझने का महत्वपूर्ण अवसर प्रदान करती है। यह स्पष्ट करती है कि संघ का उद्देश्य केवल संगठन तक सीमित नहीं है, बल्कि समाज के समग्र उत्थान और राष्ट्र निर्माण में योगदान देना है। संघ का कार्य व्यक्तिगत समर्पण, अनुशासन और सामाजिक जिम्मेदारी के माध्यम से समाज को संगठित करना है।

जानें अपना राशिफल

मेष

मेष राशि की शारीरिक स्थिति पहले से बेहतर। प्रेम–संतान अच्छा। व्यापारिक स्थिति भी अच्छी। सप्ताह की शुरुआत में धनार्जन होगा। कुटुंबों में वृद्धि होगी। जरूरत के हिसाब से वस्तुएं होंगी।

वृषभ

स्वास्थ्य अच्छा, प्रेम–संतान अच्छा एवं व्यापार की स्थिति भी अच्छी रहेगी। मध्य में वाणी से जग जीत लेंगे। धन दायक समय। मित्रता बढ़ेगी। कुटुंब सुख बढ़ेगा। अंत में व्यावसायिक सफलता के प्रबल योग बनेंगे।

मिथुन

स्वास्थ्य अच्छा चल रहा है और व्यापार भी अच्छा है। सिरदर्द, नेत्रपीड़ा संभव है। मध्य में शुभता के प्रतीक बने रहेंगे। आकर्षण के केंद्र बने रहेंगे। समाज में सराहना होगी और आपका कद बढ़ेगा।

कर्क

जीवनसाथी के साथ समीपता बढ़ेगी। प्रेमालाप बढ़ेगा। भौतिक सुख–संपदा में वृद्धि होगी। स्वास्थ्य, प्रेम व व्यापार बहुत अच्छा दिख रहा है। शुभ समाचार की प्राप्ति होगी। मध्य थोड़ा खर्चीला होगा। परेशान रखेगा।

सिंह

स्वास्थ्य की स्थिति अच्छी रहेगी। व्यापार अच्छा है। उच्चाधिकारियों का आशीर्वाद मिलेगा। मध्य में यात्रा का योग बनेगा। आर्थिक स्थिति मजबूत होगी। अंत चिंताकारी होगा। खर्च की अधिकता।

कन्या

स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। व्यापार अच्छा रहेगा। यात्रा का योग बनेगा। धर्म–कर्म में हिस्सा लेंगे। पिता का साथ होगा। कोर्ट–कचहरी में विजय मिलेगी। अंत में आर्थिक स्थिति मजबूत होने के प्रबल योग बनेंगे।

तुला

जीवनसाथी के साथ समीपता बनेगी। शादी–ब्याह तय हो सकता है। प्रेमालाप बढ़ेगा। स्वास्थ्य थोड़ा प्रभावित होगा, बुखार या ज्वार आदि हो सकता है। किसी परेशानी में पड़ सकते हैं। परिस्थितियां प्रतिकूल हैं।

वृश्चिक

स्वास्थ्य थोड़ा मध्यम है। प्रेम–संतान भी मध्यम है और व्यापार आपका सही चल रहा है। चोट–चपेट में आ सकते हैं और किसी परेशानी में पड़ सकते हैं। परिस्थितियां प्रतिकूल हैं। अंत सामान्य हो जाएगा।

धनु

स्वास्थ्य की स्थिति अच्छी है। प्रेम–संतान बहुत अच्छा है और व्यापार बहुत अच्छा है। कार्य विघ्न–बाधा के साथ संपन्न होंगे। प्रेमी–प्रेमिका की मुलाकात होगी। जो लोग विवाहित हैं उन्हें जीवनसाथी की सानिध्य मिलेगा।

मकर

स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। व्यापार अच्छा है। अत्यंत शुभकारी समय है। प्रेम में तूतू–मैं–मैं से बचें। विद्यार्थियों के लिए बहुत अच्छा समय। मध्य में स्वास्थ्य प्रभावित दिख रहा है लेकिन शत्रुओं पर काबू पाएंगे।

कुंभ

स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। प्रेम–संतान अच्छा है। व्यापार अच्छा है। जीवनसाथी का साथ मिल रहा है। नौकरी चाकरी की स्थिति अच्छी है। कानूनी व सरकारी पक्ष मिल रहा है। थोड़ा सा उदर रोग से परेशान हो सकते हैं।

मीन

व्यापार अच्छा रहेगा। शत्रुओं पर दबदबा कायम रहेगा और राजनीतिक लाभ मिलेगा। अपनों का साथ मिलेगा। भूमि, भवन व वाहन की खरीदारी के प्रबल योग बनेंगे और घर में कोई उत्सव हो सकता है या शुभ संस्कार हो सकता है।

अभ्यास का महत्व

प्राचीन समय में विद्यार्थी गुरुकुल में रहकर ही पढ़ा करते थे।. बच्चे को शिक्षा ग्रहण करने के लिए गुरुकुल में भेजा जाता था। बच्चे गुरुकुल में गुरु के सानिध्य में आश्रम की देखभाल किया करते थे. और अध्ययन भी किया करते थे।

वरदराज को भी सभी की तरह गुरुकुल भेज दिया गया। वहां आश्रम में अपने साथियों के साथ घुलने मिलने लगा।लेकिन वह पढ़ने में बहुत ही कमजोर था। गुरुजी की कोई भी बात उसके बहुत कम समझ में आती थी। इस कारण सभी के बीच वह उपहास का कारण बनता है।

उसके सारे साथी अगली कक्षा में चले गए लेकिन वो आगे नहीं बढ़ पाया।

गुरुजी जी ने भी आखिर हार मानकर उसे बोला, ''बेटा वरदराज! मैने सारे प्रयास करके देख लिये है। अब यही उचित होगा कि तुम यहां अपना समय बर्बाद मत करो। अपने घर चले जाओ और घरवालों की काम में मदद करो।''

वरदराज ने भी सोचा कि शायद विद्या मेरी किस्मत में नहीं हैं। और भारी मन से गुरुकुल से घर के लिए निकल गया गया। दोपहर का समय था। रास्ते में उसे प्यास लगने लगी। इधर उधर देखने पर उसने पाया कि थोड़ी दूर पर ही कुछ

महिलाएं कुएं से पानी भर रही थी। वह कुवे के पास गया।

वहां पत्थरों पर रस्सी के आने जाने से निशान बने हुए थे,तो उसने महिलाओ से पूछा, ''यह निशान आपने कैसे बनाएं।''तो एक महिला ने जवाब दिया, ''बेटे यह निशान हमने नहीं बनाएं। यह तो पानी खींचते समय इस कोमल रस्सी के बार बार आने जाने से ठोस पत्थर पर भी ऐसे निशान बन गए हैं।''

वरदराज सोच में पड़ गया। उसने विचार किया कि जब एक कोमल से रस्सी के बार-बार आने जाने से एक ठोस पत्थर पर गहरे निशान बन सकते हैं तो निरंतर अभ्यास से में विद्या ग्रहण क्यों नहीं कर सकता। वरदराज ढेर सारे उत्साह के साथ वापस गुरुकुल आया और अथक कड़ी मेहनत की। गुरुजी ने भी खुश होकर भरपूर सहयोग किया। कुछ ही सालों बाद यही मंदबुद्धि बालक वरदराज आगे चलकर संस्कृत व्याकरण का महान विद्वान बना। जिसने लघुसिद्धान्तकौमुदी, मध्यसिद्धान्तकौमुदी, सारसिद्धान्तकौमुदी, गीर्वाणपदमंजरी की रचना की।

शिक्षा : दोस्तो अभ्यास की शक्ति का तो कहना ही क्या हैं।. यह आपके हर सपने को पूरा करेगी। अभ्यास बहुत जरूरी है चाहे वो खेल मे हो या पढ़ाई में या किसी ओर चीज़ में। बिना अभ्यास के आप सफल नहीं हो सकते हो। अगर आप बिना अभ्यास के केवल किस्मत के भरोसे बैठे रहोगे, तो आखिर मैं आपको पछतावे के सिवा और कुछ हाथ नहीं लगेगा। इसलिए अभ्यास के साथ धैर्य, परिश्रम और लगन रखकर आप अपनी मंजिल को

सफलता का रहस्य-सुकरात

एक बार एक व्यक्ति ने महान सुकरात से पूछा कि ''सफलता का रहस्य क्या है?''? सुकरात ने उस इंसान को कहा कि वह कल सुबह नदी के पास मिले, वही पर उसे अपने प्रश्न का जवाब मिलेगा।

जब दूसरे दिन सुबह वह व्यक्ति नदी के पास मिला तो सुकरात ने उसको नदी में उतरकर, नदी गहराई की गहराई मापने के लिए कहा।

वह व्यक्ति नदी में उतरकर आगे की तरफ जाने लगा। जैसे ही पानी उस व्यक्ति के नाक तक पहुंचा, पीछे से सुकरात ने आकर अचानक से उसका मुंह पानी में डुबो दिया। वह व्यक्ति बाहर निकलने के लिए झटपटाने लगा, कोशिश करने लगा लेकिन सुकरात थोड़े ज्यादा थे। सुकरात ने उसे काफी देर तक पानी में डुबोए रखा।

कुछ समय बाद सुकरात ने उसे छोड़ दिया और उस व्यक्ति ने जल्दी से अपना मुंह पानी से बाहर निकालकर जल्दी जल्दी साँस ली।

सुकरात ने उस व्यक्ति से पूछा ''जब तुम पानी में थे तो तुम क्या चाहते थे?'' व्यक्ति ने कहा ''जल्दी से बाहर निकलकर सांस लेना चाहता था।'' सुकरात ने कहा ''यही तुम्हारे प्रश्न का उतर है। जब तुम सफलता को उतनी ही तीव्र इच्छा से चाहोगे जितनी तीव्र इच्छा से तुम सांस लेना चाहते है, तो तुम्हे सफलता निश्चित रूप से मिल जाएगी।''

हल करो हीरो बनो

1. प्रतिवर्ष ''अंतरराष्ट्रीय जैव-विविधता दिवस' कब मनाया जाता है?
(क) 22 मई को (ख) 23 मई को
(ग) 25 मई को (घ) 20 मई को
सही उत्तर : 22 मई को
2. कौन व्यक्ति हाल ही में, मोदी के नए निजी सचिव नियुक्त किए गए है?
(क) जीतेन्द्र शाह (ख) विवेक कुमार
(ग) अजीत खन्ना (घ) ऋषभ नागर
सही उत्तर : विवेक कुमार
3. हाल ही में, 'एंथनी अल्बनीस' किस देश के नए प्रधानमंत्री बने है?
(क) ऑस्ट्रेलिया (ख) ब्राजील
(ग) न्यूजीलैंड (घ) इजरायल
सही उत्तर : ऑस्ट्रेलिया
4. प्रतिवर्ष 'अंतराष्ट्रीय चाय दिवस' मई महीने की किस तारीख को मनाया जाता है?
(क) 21 तारीख को (ख) 22 तारीख को
(ग) 24 तारीख को (घ) 25 तारीख को
सही उत्तर : 21 तारीख को

मार लो मुस्की

पप्पू समंदर किनारे लेटा धूप ले रहा था..
एक अमेरिकन- आर यू रिलैक्सिंग?
पप्पू- नो डियर आई एम पप्पू...
थोड़ी देर बाद एक दूसरा अमेरिकन वहां से गुजरा- आर यू रिलैक्सिंग?
पप्पू चिल्लाकर- कमीने, आई एम पप्पू!फिर खिजलाकर पप्पू वहां से उठकर दूसरी तरफ चला गया, जहां एक अमेरिकन सुंदरी लेटी थी
पप्पू ने उससे पूछा- आर यू रिलैक्सिंग?
अमेरिकन सुंदरी- यस, आई एम रिलैक्सिंग...
पप्पू उसे एक तमाचा मार के बोला, यहां पड़ी है,
उधर तुझे तेरे घरवाले ढूंढ रहे हैं।

▶▶ ▶▶ ▶▶ ▶▶ ▶▶

इंटरव्यू में बॉस ने पूछा- क्या आपको ब्रिटिश भाषा आती है?
लड़का- हां
बॉस- कुछ बोल के दिखाओ
लड़का- डूगना लागान डेना पडेगा बुबन!
बॉस- बॉस बेहोश...

▶▶ ▶▶ ▶▶ ▶▶ ▶▶

सुबह-सुबह पत्नी नींद से उठते ही बोली- अजी सुनते हो...
पति- बोलो, क्या हुआ?
पत्नी- मुझे सपना आया कि आप मेरे लिए हीरों का हार लेकर आए हो।
पति (गुस्से में)- ठीक है तो वापस सो जाओ और पहन लो...!

▶▶ ▶▶ ▶▶ ▶▶ ▶▶

पति-पत्नी की लड़ाई हो गई
पति ने ऑफिस से फोन किया- रात के खाने में क्या बनाया
पत्नी (गुस्से में)- जहर
पति- मैं आज देर से घर आऊंगा, तुम खाकर सो जाना....

▶▶ ▶▶ ▶▶ ▶▶ ▶▶

पत्नी- सुनो जी, आपने कामवाली बाई को बोल दिया क्या?
पति- नहीं तो, क्यों क्या हुआ?
पत्नी- कल तक मुझे मेम साहब बुलाती थी,
आज दीदी बुला रही है.....

पुलिस- तुमने एक ही दुकान में लगातार तीन दिन चोरी की

▶▶ ▶▶ ▶▶ ▶▶ ▶▶

चोर- मैंने सिर्फ एक दिन अपनी बीवी के लिए सूट चोरी किया था,
बाकि दो दिन तो कलर बदलने गया था.....

▶▶ ▶▶ ▶▶ ▶▶ ▶▶

बहू- मांजी ये अभी तक क्यों नहीं आए?
कहीं इनका किसी दूसरी लड़की के साथ कुछ
सास- अरे कलमुंही, तू हमेशा उल्टा क्यों सोचती है?
ऐसा भी तो हो सकता है कि किसी ट्रक के नीचे आ गया हो.....

▶▶ ▶▶ ▶▶ ▶▶ ▶▶

सास- तुम तैयार होने में बहुत टाइम लगाती हो
मुझे देखो, मैं 2 मिनट में तैयार हो जाती हूं
बहू- मांजी यही फर्क तो है, लौकी और शाही पनीर में.....

▶▶ ▶▶ ▶▶ ▶▶ ▶▶

पड़ोसन- बहन, नया हार तो बहुत अच्छा है, कितने का पड़ा?
दूसरी महिला- ज्यादा नहीं, दो दिन की लड़ाई, एक दिन की भूख हड़ताल
2 दिन का मौन व्रत और बस थोड़ा रोना धोना
पड़ोसन भी अपने पति से रूठ जाती है....

माथापच्ची–10

			9	6	1	5		
	2	1		4				3
		5				7		
9		4				3	8	
			4	9	7			
	7	6				2		9
		3				4		
8				2		9	6	
		9	6	7	8			

नियम : प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक अंक भरे जाने आवश्यक है, इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है। आड़ी एवं खड़ी पंक्ति में एवं 3 3 के वर्ग में अंक की पुनरावृत्ति न हो, पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते। उत्तर अगले अंक में

माथापच्ची 9 का हल

5	6	4	2	9	7	3	8	1
8	7	1	6	3	5	9	2	4
9	2	3	8	4	1	6	7	5
2	8	6	4	5	3	1	9	7
1	4	7	9	2	8	5	6	3
3	9	5	1	7	6	2	4	8
6	5	2	7	1	4	8	3	9
7	3	8	5	6	9	4	1	2
4	1	9	3	8	2	7	5	6

82वें वेनिस फिल्म फेस्टिवल में बंगाली बाला का शानदार प्रदर्शन

अनुपर्णा रॉय ने सर्वश्रेष्ठ निर्देशक का जीता खिताब

निज संवाददाता : बंगाली बाला ने अंतरराष्ट्रीय मंच पर परचम लहराया। फिल्म निर्माता अनुपर्णा रॉय ने 82वें वेनिस फिल्म फेस्टिवल के ओरिजिन्टी सेक्शन में सर्वश्रेष्ठ निर्देशक का खिताब जीता। बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने सोमवार को अपने एक्स हैंडल पर उन्हें बधाई दी।ममता ने लिखा-हमारी पुरुलिया की अनुपर्णा रॉय को एक असाधारण अंतरराष्ट्रीय पुरस्कार मिलने की खबर सुनकर मुझे बहुत खुशी हुई। मैं उन्हें, उनके माता-पिता, उनके सभी दोस्तों और सहयोगियों को बधाई देती हूं। अनुपर्णा ने विश्व प्रसिद्ध वेनिस फिल्म महोत्सव में अपनी श्रेणी में सर्वश्रेष्ठ निर्देशक का पुरस्कार जीता है, जिसे व्यावहारिक रूप से सिनेमा जगत में विश्व विजय कहा जा सकता है।

उनसे पहले किसी भी भारतीय निर्देशक को इस श्रेणी में यह पुरस्कार नहीं मिला है। उनके माता-पिता परिवार में

रहते हैं, उनकी जड़ें जंगलमहल, रंगीन मिट्टी में हैं। मुझे लगता है कि उनका ताज पहनाया जाना हमारी बंगाली लड़कियों की जीत है। मुख्यमंत्री ने कहा-अनुपर्णा, आगे बढ़ो, हमारे चेहरों को और भी चमकदार बनाओ। नितुरिया के साराबारी के पास नारायणपुर की पूर्व निवासी अनुपर्णा को इलाके में सभी मांपी के नाम से जानते हैं। वह नितुरिया के रानीपुर हाई स्कूल की छात्रा हैं। माध्यमिक विद्यालय में उन्हें प्रथम श्रेणी नहीं मिली थी। इसलिए उनके माता-पिता ने उन्हें उनके चाचा, जो एक अंग्रेजी शिक्षक थे, के पास भेज दिया। तब से, किशोरी अनुपर्णा का जीवन धीरे-धीरे बदलने लगा। अपने चाचा नीलोत्पल सिंह का हाथ थामकर उन्होंने अपने मन में अंग्रेजी साहित्य, भारतीय संस्कृति और सबसे बढ़कर जीवन को एक अलग नजरिए से देखने का विचार डाला। इसलिए पारंपरिक रास्ते पर चलने के बजाय, उन्होंने एक प्रसिद्ध कॉर्पोरेट कंपनी में कुछ नौकरियां छोड़ दीं और फिल्म निर्माण पर ध्यान केंद्रित किया। सर्वश्रेष्ठ निर्देशक का खिताब मिलने के बाद, अनुपर्णा ने सोशल मीडिया पर लिखा-मां मेरे पहले शिक्षक हैं।अनुपर्णा ने 2021 में पुरुलिया के पंचर नापारा के अजपारा गांव में अपनी पहली फिल्म की शूटिंग शुरू की। नापारा के विभिन्न दृश्यों में शूटिंग के बाद, उनकी पहली फिल्म रन टू द रिवर 2023 में रिलीज़ हुई। उनकी दूसरी फिल्म सॉन्ग्स ऑफ फॉरगॉटन ट्रीज़ ने उन्हें वेनिस में सर्वश्रेष्ठ निर्देशक का पुरस्कार दिलाया। दो साल पहले, 2023 में, काली पूजा के दौरान, अनुपर्णा आखिरी बार अपने चाचा के घर पंचर नापारा गई थीं। पूरा परिवार उनकी सफलता पर गर्व करता है।

उम्मीदों की चिप ने दिए आत्म गौरव और नवाचार को पंख

निज संवाददाता : भारत ने सेमीकंडक्टर निर्माण के क्षेत्र में ऐतिहासिक कदम उठाते हुए विश्व स्तर पर अपनी तकनीकी पहचान बनाई है। गुजरात और कर्नाटक में चिप पार्क, विदेशी निवेश और शिक्षा संस्थानों की सक्रिय भागीदारी ने इस अभियान को गति दी है। शंघाई सहयोग संगठन (एससीओ) शिखर सम्मेलन 2025 में भारत ने सुरक्षा, संपर्क और अवसर के तीन स्तंभों पर बल देकर तकनीक को साझा भविष्य का आधार बताया। यह चिप क्रांति न केवल आर्थिक विकास का मार्ग प्रशस्त कर रही है, बल्कि राष्ट्रीय सुरक्षा, नवाचार और आत्मगौरव की नई उड़ान भी भर रही है।भारत आज उस ऐतिहासिक दौर से गुजर रहा है जहां सपने केवल सपने नहीं रह गए हैं, बल्कि नये यथार्थ का रूप ले चुके हैं। दशकों तक जिस देश को तकनीक के क्षेत्र में उपभोक्ता भर समझा जाता था, वही देश आज निर्माता, आपूर्तिकर्ता और नवप्रवर्तक बनने की राह पर तेज़ी से बढ़ रहा है। सेमीकंडक्टर और चिप निर्माण की दिशा में भारत के प्रयास इसी परिवर्तन की सबसे सशक्त गवाही देते हैं। यह केवल तकनीकी विकास का संकेत नहीं है, बल्कि राष्ट्रीय आत्मगौरव, आत्मनिर्भरता और आत्मविश्वास की उड़ान भी है।चिप अथवा सेमीकंडक्टर आज के युग की सबसे अनिवार्य धुरी है। बीसवीं शताब्दी में तेल ने जैसे विश्व राजनीति और अर्थव्यवस्था को संचालित किया था, उसी

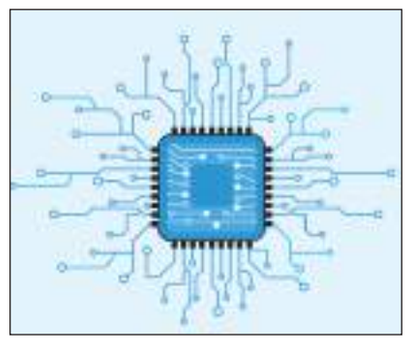

प्रकार इक्कीसवीं शताब्दी में चिप वैश्विक शक्ति संतुलन का आधार बन चुकी है। आधुनिक जीवन का कोई भी क्षेत्र इससे अछूता नहीं है। मोबाइल फ़ोन, कंप्यूटर, स्मार्ट यंत्र, वाहन, रेल, हवाई जहाज़, रक्षा उपकरण, उपग्रह, स्वास्थ्य सेवाओं के उन्नत यंत्र, कृत्रिम बुद्धिमत्ता और रोबोट तकहर क्षेत्र में चिप की अनिवार्यता स्पष्ट दिखाई देती है। इसीलिए जो राष्ट्र इस क्षेत्र में आत्मनिर्भर और सशक्त है, वही आने वाले समय में विश्व की राजनीति और अर्थव्यवस्था में निर्णायक भूमिका निभाएगा।भारत की स्थिति लंबे समय तक इस क्षेत्र में कमजोर रही। भारी पूंजी निवेश, लगातार ऊर्जा और जल संसाधनों की आवश्यकता, प्रशिक्षित मानव संसाधन की कमी और अनुसंधान की उपेक्षा जैसे कारणों से भारत पिछड़ता रहा। चीन, ताइवान, अमेरिका और कोरिया जैसे देशों ने इस स्थिति का लाभ उठाकर वैश्विक बाज़ार पर प्रभुत्व कायम किया और भारत को केवल एक विशाल उपभोक्ता बाज़ार के रूप में देखा जाने लगा। किन्तु राष्ट्रों के जीवन में भी ऐसे क्षण आते हैं जब परिस्थितियां बदली हुई राह पर चलने को बाध्य करती हैं। भारत के लिए भी यही अवसर बीते कुछ वर्षों में आया और उसने चुनौती को अवसर में बदलने का संकल्प लिया।प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में प्रारम्भ हुए 'डिजिटल इंडिया', 'मेक इन इंडिया' और 'स्टार्टअप इंडिया' जैसे अभियानों ने तकनीकी आत्मनिर्भरता की दिशा में नया उत्साह जगाया। इन अभियानों ने यह संदेश दिया कि भारत अब केवल उपभोक्ता नहीं, बल्कि निर्माता भी बनेगा। वर्ष 2021 में घोषित भारत सेमीकंडक्टर मिशन ने इस संकल्प को ठोस आधार प्रदान किया। इसके अंतर्गत गुजरात और कर्नाटक में चिप निर्माण पार्क स्थापित करने की दिशा में कार्य प्रारम्भ हुआ। ताइवान, जापान और अमेरिका की कंपनियों ने भारत में निवेश और सहयोग की इच्छा प्रकट की। अरबों डॉलर के निवेश प्रस्ताव आए और अनुसंधान संस्थानों को सीधे इस अभियान से जोड़ा गया।कोविड महामारी ने वैश्विक आपूर्ति शृंखला की कमजोरियों को उजागर कर दिया। जब चीन और ताइवान के कारखाने ठप पड़े तो पूरी दुनिया में मोबाइल, वाहन और इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों का संकट खड़ा हो गया।

दुश्मन देश के साथ क्रिकेट का क्या औचित्य?

निज संवाददाता

14 सितंबर को दुबई इंटरनेशनल क्रिकेट स्टेडियम में होने वाला एशिया कप 2025 का भारत-पाकिस्तान मुकाबला खेल से कहीं अधिक, एक भावनात्मक और राजनीतिक बहस बन चुका है। आमतौर पर इस मैच का ऐलान होते ही पूरे देश में उत्साह और रोमांच का माहौल बनता है। टिकट कुछ ही घंटों में बिक जाते हैं, पब और रेस्टोरेंट्स बड़ी स्क्रीन पर लाइव प्रसारण दिखाने के लिए बुकिंग शुरू कर देते हैं और लोग इसे क्रिकेट का महाकुंभ मानते हैं। लेकिन इस बार नज़ारा बिल्कुल उलट है। पहलगाम हमले और ऑपरेशन सिंदूर की टीस अब भी ताज़ा है, और देश का जनमानस पूछ रहा है कि जब हमारे जवानों और नागरिकों का खून अभी सूखा भी नहीं, तो दुश्मन देश के साथ क्रिकेट खेलने का क्या औचित्य है?22 अप्रैल को जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में हुआ आतंकी हमला भारत की आत्मा को झकझोर देने वाला था। चार आतंकियों ने बैसरन घाटी में टूरिस्टों पर अंधाधुंध फायरिंग की और धर्म पूछकर लोगों को गोलियों से भून दिया। इस नृशंस वारदात में 26 निर्दोषों की जान चली गई, जिनमें महिलाएं, बच्चे, एक नेपाली नागरिक और एक ईसाई पर्यटक शामिल थे। 22 लोग घायल हुए। आतंकी संगठन 'द रेसिस्टेंस फ्रंट', जो लश्कर-ए-तैयबा की शाखा है, ने इसकी जिम्मेदारी ली। भारतीय खुफिया एजेंसियों ने साफ किया कि यह पाकिस्तान प्रायोजित हमला था। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने तुरंत सऊदी अरब यात्रा रद्द कर आपात बैठक बुलाई और गृह मंत्री अमित शाह ने सुरक्षा समीक्षा की। इसके बाद भारत ने अटारी-वाघा बॉर्डर बंद कर दिया, पाकिस्तानी वीज़ा रद्द कर दिए और

सिंधु जल संधि स्थगित कर दी। इस हमले की तुलना 'हमास पैटर्न' से की गई क्योंकि इसमें सीधे निर्दोष नागरिकों को निशाना बनाया गया।पहलगाम की इस त्रासदी के बाद देश का गुस्सा शांत नहीं हुआ था कि मई में भारत ने जवाबी कार्रवाई के तौर पर ''ऑपरेशन सिंदूर'' शुरू किया। भारतीय वायुसेना के राफेल विमानों ने पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर के मुजफ्फराबाद और कोटली से लेकर पाकिस्तान के बहावलपुर तक नौ आतंकी ठिकानों को मिसाइलों से तबाह कर दिया। रक्षा मंत्रालय के अनुसार इस कार्रवाई में करीब 100 आतंकी और 130 पाकिस्तानी सैनिक मारे गए। लेकिन पाकिस्तान ने भी पलटवार किया और ड्रोन तथा मिसाइल हमलों में भारत ने 20 जवान खो दिए। यह देश के लिए एक और बड़ा सदमा था। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने कहा कि भारत ने मुंहतोड़ जवाब दिया है, लेकिन शहीदों की कुर्बानी ने जनता को गहराई तक आहत कर दिया।इसी पृष्ठभूमि में जब भारत-पाकिस्तान क्रिकेट मैच की घोषणा हुई, तो जनता का गुस्सा फूट पड़ा। ट्विटर, फेसबुक और इंस्टाग्राम पर और जैसे हैशटैग ट्रेंड करने लगे। लोग लिख रहे थे कि शहीदों के खून पर क्रिकेट का तमाशा नहीं होना चाहिए। कई जगहों पर बीसीसीआई के खिलाफ प्रदर्शन हुए, पाकिस्तानी झंडे जलाए गए। मुरादाबाद में सपा नेता एसटी हसन ने कहा कि शहीदों के अपमान को बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। बीजेपी के पूर्व सांसद गौतम गंभीर ने ट्वीट किया कि आतंकवाद रुके बिना पाकिस्तान से कोई मैच नहीं खेला जाना चाहिए। शिवसेना के संजय राउत ने इसे राष्ट्रद्रोह बताया और बीसीसीआई को कटघरे में खड़ा किया। आदित्य ठाकरे ने तो यहां तक कहा कि पाकिस्तान से क्रिकेट खेलना शहीदों के परिवारों के जख्मों पर नमक छिड़कना है। यहां तक कि लेफ्ट और राइट पार्टियां, जो अक्सर एक-दूसरे के खिलाफ रहती हैं, इस बार एक सुर में पाकिस्तान के साथ क्रिकेट का विरोध करती दिखीं। सिर्फ राजनीतिक दल ही नहीं, क्रिकेट जगत के कई बड़े नाम भी इस बहस में कूद पड़े। पूर्व क्रिकेटर हरभजन सिंह ने साफ कहा कि भारत-पाक मैच तब तक नहीं होना चाहिए जब तक रिश्ते सामान्य नहीं हो जाते। उनका कहना था कि जब हमारे जवान घर नहीं लौटते, तो ऐसे समय में पाकिस्तान के साथ क्रिकेट खेलना देश की भावनाओं के साथ खिलवाड़ है। यही भावना शहीदों के परिवारों की भी है। कानपुर के शहीद शुभम द्विवेदी की पत्नी और पिता ने सोशल मीडिया पर भावुक पोस्ट लिखकर सरकार और बीसीसीआई से पाकिस्तान का पूर्ण बहिष्कार करने की मांग की।

'कोलकाता जिमखाना टेनिस क्लब' और 'कोलकाता हुनर' ने जरूरतमंद बच्चों के बीच बांटी खुशियां

निज संवाददाता : शिक्षक दिवस के अवसर पर कोलकाता हुनर और कोलकाता जिमखाना टेनिस क्लब द्वारा एक विशेष सामाजिक और परोपकारी कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस पहल का नेतृत्व अरिफ़ अहमद (अध्यक्ष, कोलकाता हुनर) ने किया। कार्यक्रम में संगठन की उपाध्यक्ष इजाज़ अफ़ज़ल, सचिव महज़बीन अहमद व जिमखाना क्लब के पदाधिकारी मौजूद रहे।इस कार्यक्रम में फूलबागान, एंटाली स्थित ''किड्स पैराडाइज़'' फ्री प्ले स्कूल के नन्हे-मुन्ने बच्चों को आमंत्रित किया गया था, जो

कोलकाता हुनर के प्रयास से संचालित होता है। बच्चों को स्टेशनरी, उपहार एवं खिलौने वितरित किए गए। छोटे बच्चों ने खेल, हंसी और प्यार से भरे इस दिन का भरपूर आनंद उठाया।कार्यक्रम को सफल बनाने में प्रमोद कुमार अग्रवाल (अध्यक्ष, कोलकाता जिमखाना टेनिस क्लब), सौरव मित्रा (उपाध्यक्ष), अभिषेक बगरिया, महासचिव सुबोराज घोष तथा क्लब के सभी सदस्यों का विशेष योगदान रहा। अरिफ़ अहमद ने धन्यवाद देते हुए कह -डॉ. अंशुमान आचार्य जी की मदद से ही हमें इतने महान समाजसेवियों से मिलने का अवसर प्राप्त हुआ। यह दिन बच्चों के लिए अविस्मरणीय रहेगा।बच्चों की खिलखिलाहट और मासूम मुस्कान ने पूरे कार्यक्रम को जीवंत बना दिया। अरिफ़ अहमद ने आगे कहा-कोलकाता हुनर केवल एक संगठन का नाम नहीं, बल्कि प्रगतिशील सोच का प्रतीक है। हमारा उद्देश्य है कि हर बच्चा सही दिशा में बढ़े और बेहतर इंसान बने। समाज के सभी वर्गों के सहयोग और मार्गदर्शन से ही हम एक बेहतर दुनिया का निर्माण कर सकते हैं।

विश्व की सबसे समृद्ध भाषाओं में शुमार है हिन्दी

रमेश सर्राफ धमोरा

हिन्दी एक भारतीय इंडो-यूरोपीय भाषा है जो संस्कृत से विकसित हुई और देवनागरी लिपि में लिखी जाती है। देवनागरी लिपि में ही संस्कृत, मराठी, नेपाली और कई अन्य भारतीय भाषाएं भी लिखी जाती हैं। देवनागरी का अर्थ है ''देवताओं की लिपि'' या ''शहर की लिपि''। यह संस्कृत के दो शब्दों देव (ईश्वर/देवता) और नागरी (नगर/शहर से लिया गया विशेषण) से मिलकर बना है। देवनागरी एक ब्राह्मी-आधारित वर्णमाला है जिसका उपयोग भारत की कई भाषाएं जैसे हिंदी, मराठी और संस्कृत को लिखने के लिए किया जाता है। इसीलिए हिंदी भाषा को संस्कृत भाषा की प्रत्यक्ष वंशज कहा जाता है।हिंदी भाषा एक दूसरे के साथ बातचीत करने के लिए बहुत आसान और सरल माध्यम प्रदान करती है। यह प्रेम, मिलन और सौहार्द की भाषा है। हिन्दी विविध भारत को एकता के सूत्र में पिरोने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। लेकिन यह कैसी विडम्बना है कि जिस भाषा को कश्मीर से कन्याकुमारी तक सारे भारत में समझा जाता हो। उस

14 सितम्बर हिन्दी दिवस पर विशेष

भाषा के प्रति आज भी इतनी उपेक्षा व अवज्ञा क्यों? प्रत्येक वर्ग का व्यक्ति हिन्दी भाषा को आसानी से बोल-समझ लेता है। इसलिए इसे सामान्य जनता की भाषा अर्थात जनभाषा कहा गया है।हिन्दी भारत सरकार की आधिकारिक भाषा है और हिंदी बोलने वालों की संख्या भारत में सर्वाधिक है। हिंदी भाषा का अर्थ है ''भारत या हिंद से संबंधित'' यह भारत की आधिकारिक राजभाषा है और दुनिया में तीसरी सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा है। इसका इतिहास प्राचीन संस्कृत और प्राकृत भाषाओं से जुड़ा है। हिन्दी भाषा का जन्म भारत में ही हुआ था। एक भाषा के रूप में हिंदी न सिर्फ भारत की पहचान है, बल्कि यह हमारे जीवन मूल्यों, संस्कृति एवं संस्कारों की सच्ची परिचायक भी है। बहुत सरल, सहज और सुगम भाषा होने के साथ हिंदी विश्व की संभवतः सबसे वैज्ञानिक भाषा है। जिसे दुनिया भर में समझने, बोलने और चाहने वाले लोग बहुत बड़ी संख्या में मौजूद हैं। भारतेन्दु हरिश्चंद्र को आधुनिक हिंदी का जनक कहा जाता है। जिन्होंने हिंदी, पंजाबी, बंगाली और मारवाड़ी सहित कई भाषाओं में अपना योगदान दिया था।भारत की स्वतंत्रता के बाद 14 सितम्बर 1949 को संविधान सभा ने एक मत से यह निर्णय लिया कि हिन्दी की खड़ी बोली ही भारत की राजभाषा होगी। इस महत्वपूर्ण निर्णय के बाद 1953 से सम्पूर्ण भारत में 14 सितम्बर को प्रतिवर्ष हिन्दी-दिवस के रूप में मनाया जाने लगा है जो हिंदी भाषा के महत्व को दर्शाता है। यदि हम हिंदी भाषा के विकास की बात करें तो यह कहना गलत नहीं होगा कि पिछले सौ सालों में हिंदी का बहुत विकास हुआ है।

मेधावी छात्र-छात्राओं को किया गया सम्मानित

कोलकाता। भारतीय भाषा परिषद सभागार में सर्च फाउंडेशन वह हरियाणा सेवा सदन कोलकाता के तत्वावधान में प्रतिभा सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। इस दौरान कक्षा 10 और 12 वी में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाले छात्र-छात्राओं को सम्मानित किया गया। मुख्य अतिथि के तौर पर श्री गोविंद राम जी अग्रवाल एवं विष्णु दास जी मित्तल उपस्थित रहे। वही सम्मान समारोह में बच्चों ने रंगारंग कार्यक्रम प्रस्तुत कर श्रोताओं का मन भा लिया इस कार्यक्रम में कोलकाता के जाने-माने कई सामाजिक कार्यकर्ता कई विद्यालय के शिक्षक शिक्षार्थी उपस्थित थे इस कार्यक्रम को सफल बनाने में सच फाउंडेशन की प्रमुख संचिता जी का महत्वपूर्ण योगदान रहा।

योगी की मेहनत पर पानी फेर रहे है बीजेपी के नाकारा पार्षद

निज संवाददाता

लखनऊ : उत्तर प्रदेश की राजनीति में इन दिनों जिस तरह से पार्षदों की भूमिका को लेकर सवाल उठ रहे हैं, उसने न केवल योगी सरकार की चिंता बढ़ा दी है बल्कि स्थानीय निकाय चुनावों में पार्टी की भविष्य की संभावनाओं पर भी सवालिया निशान खड़ा कर दिया है। कहा जा रहा है कि भारतीय जनता पार्टी के हजारों पार्षदों ने सरकार की नींद उड़ा रखी है, क्योंकि ये न तो जनता के काम आ पा रहे हैं और न ही खुद को जिम्मेदार जनप्रतिनिधि साबित कर पा रहे हैं। इन पर आरोप है कि इन्हें न तो अपने क्षेत्र के विकास की कोई फिक्र है और न ही जनता से जुड़े मुद्दों में इनकी कोई दिलचस्पी। उलटे इनमें से अधिकांश पार्षद अपने दफ्तरों और बैठकों से गायब रहते हैं, जबकि जब कहीं ठेकेदारी या कमीशन लेने का मामला आता है तो ये सबसे आगे कूद पड़ते हैं। यही वजह है कि विकास कार्य ठप पड़े रहते हैं और जनता का गुस्सा सीधे-सीधे योगी सरकार पर फूटने लगा है।रिपोर्ट्स बताती हैं कि कई नगर निगमों और नगर पालिकाओं के पार्षद पिछले लंबे समय से अपने क्षेत्र में नजर ही नहीं आए। जनता जब उनसे संपर्क करने जाती है तो या तो यह फोन पर उपलब्ध नहीं होते, या बहानेबाजी करके टालमटोल कर देते हैं। लखनऊ के आलमबाग इलाके का उदाहरण लें, वहां के लोग शिकायत कर रहे हैं कि पिछले चार महीने से सड़कों की मरम्मत रुकी हुई है, नालियों की सफाई नहीं हो रही, लेकिन स्थानीय पार्षद न तो मौके पर आ रहे हैं और न ही नगर निगम से कोई दबाव बना पा रहे हैं। यही हाल कानपुर नगर निगम के हर्ष नगर वार्ड में देखने को मिला, जहां पर लंबे समय से जलभराव की समस्या से लोग परेशान हैं। पार्षद से बार-बार निवेदन किया गया, लेकिन न उन्होंने खुद फील्ड में जाकर हालात देखे और न ही अफसरों पर कार्रवाई का दबाव बनाया। जनता का कहना है कि पार्षद सिर्फ टेंडर पास कराने में या कमीशन लेने में सक्रिय होते हैं, लेकिन जनता को राहत दिलाने में उनकी दिलचस्पी नहीं है।यह समस्या किसी एक नगर निगम या पालिका तक सीमित नहीं है।

गोरखपुर, वाराणसी, प्रयागराज, मेरठ, अयोध्या जैसे बड़े नगरों से लेकर छोटे कस्बों तक हर जगह से ऐसी शिकायतें आ रही हैं। बलिया जिले में तो हाल यह है कि कई पार्षद अपनी मौजूदगी ही दर्ज नहीं कराते। वे न तो बैठकों में शामिल होते हैं और न ही जनता के बीच दिखाई देते हैं। परिणाम यह है कि जनता में यह धारणा तेजी से बन रही है कि पार्षद बस राजनीतिक टिकट पाने और लाभ कमाने के लिए चुने जाते हैं, जनता की सेवा इनकी प्राथमिकता नहीं है। कुछ मामलों में तो शिकायतें इतनी गंभीर हो गईं कि लोग आरटीआई के जरिए कामकाज की जांच करने लगे। मुरादाबाद नगर निगम में एक पार्षद के खिलाफ तो यह शिकायत भी आई कि उन्होंने नाली निर्माण के ठेकेदार से खुलेआम कमीशन मांगा। इस तरह की घटनाएं जब उजागर होती हैं तो सरकार की छवि पर सीधा असर पड़ता है, क्योंकि आखिरकार जनता इसकी जिम्मेदारी योगी सरकार पर ही डालती है।यूपी की जनता पहले से ही महंगाई, बेरोजगारी और कानून-व्यवस्था जैसी समस्याओं से जूझ रही है और उस पर जब स्थानीय स्तर पर भी उसकी सुनवाई नहीं होती, तो गुस्सा और बढ़ना तय है। भाजपा के पार्षद जिस तरह से काम कर रहे हैं, उससे जनता के भीतर यह संदेश जा रहा है कि सत्ताधारी दल सिर्फ चुनाव जीतने और सत्ता पाने के लिए है, सेवा और विकास की बात बस कागजों पर होती है। विपक्ष ने भी इस मुद्दे को भुनाने का काम शुरू कर दिया है। समाजवादी पार्टी और कांग्रेस लगातार यह आरोप लगा रही हैं कि भाजपा ने भ्रष्ट और नाकारा पार्षदों को टिकट देकर जनता के साथ धोखा किया है। योगी सरकार के विकास के दावों को सवालों के घेरे में खड़ा करते हुए विपक्ष यह कह रहा है कि जब जमीनी स्तर पर भाजपा के पार्षद ही काम नहीं करेंगे, तो विकास की कोई भी योजना धरातल पर कैसे उतर सकती है।दिलचस्प बात यह भी है कि जब जनता पार्षदों की शिकायत लेकर बीजेपी के स्थानीय नेताओं या मंत्रियों तक पहुंचती है तो वहां से भी उन्हें कोई खास राहत नहीं मिलती। कई मामलों में पार्षदों की शिकायतें सीधे मुख्यमंत्री कार्यालय तक भी पहुंची हैं, लेकिन कार्रवाई न होने से लोगों के मन में निराशा और गुस्सा दोनों ही बढ़ रहा है। कानपुर ग्रामीण की एक घटना इसका स्पष्ट उदाहरण है। वहां एक पार्षद ने हैंड पंप लगवाने के नाम पर हजारों रुपए की वसूली की, लेकिन हैंडपंप आज तक नहीं लगा। जब इस शिकायत को जिले के आला अधिकारियों तक ले जाया गया तो उन्होंने भी टालमटोल कर दी। ऐसे में जनता का गुस्सा योगी सरकार की ओर मुड़ना बिल्कुल स्वाभाविक है। भाजपा के लिए यह स्थिति बेहद चुनौतीपूर्ण है क्योंकि 2027 के विधानसभा चुनावों की राह में स्थानीय निकायों और पार्षदों की अहम भूमिका होती है।

रजनीकांत की कुली ने भरी ऊंची उड़ान

वॉर 2 का हाल... आमदनी अठन्नी खर्चा रुपैया

मुंबई : ऋतिक रोशन, जूनियर एनटीआर और कियारा आडवाणी की वॉर 2 इसी महीने 14 अगस्त को सिनेमाघरों में रिलीज हुई। इस फिल्म को रिलीज हुए 14 दिन गुजर चुके हैं। वहीं इस फिल्म के साथ ही थिएटरों में रजनीकांत की फिल्म कुली भी रिलीज हुई। कमाई के मामले में इस वक्त दोनों फिल्मों को स्ट्रगल करना पड़ रहा है। स्ट्रगल इसलिए कहेंगे क्योंकि इन दोनों फिल्मों का बजट ही करीब 400 करोड़ के आसपास है और ऐसे जो कमाई हो रही है, उसे देखकर आमदनी अठन्नी खर्चा रुपैया वाली कहावत याद आ रही। अयान मुखर्जी निर्देशित वॉर 2 में ऋतिक रोशन के अलावा कियारा आडवाणी, जूनियर एनटीआर, अनिल कपूर और आशुतोष राणा भी हैं। इस बार वाईआरएफ के स्पाई यूनिवर्स को पैन इंडिया बनाने के लिए जूनियर एनटीआर की एंट्री कराई गई। इसके बावजूद 2 घंटे 53 मिनट की ये फिल्म लोगों को खींचने में पूरी तरह से कामयाब नहीं दिख रही है। इस फिल्म को लेकर कहा जा रहा है कि वही पुरानी स्टोरी को पकाने की कोशिश की गई है जो दर्शकों को उबाऊ लगे हैं। इसके अलावा कहा ये भी गया है कि न तो इसमें मनोरंजन है और न ही सितारों का सही इल्तेमाल किया गया है। यही वजह है कि वॉरी 2 जैसे-तैसे थिएटरों में खुद को खींच रही है।

कुली ऋतिक की वॉर 2 से बढ़िया परफॉर्म कर रही

इसके अलावा 14 अगस्त को ही रिलीज हुई रजनीकांत की कुली ऋतिक की वॉर 2 से बढ़िया परफॉर्म कर रही है। इस फिल्म को गणेश चतुर्थी की छुट्टी का भरपूर फायदा मिला। रिपोर्ट के मुताबिक, कुली ने 14वें दिन यानी बुधवार को बम्पर कमाई की है और करीब 4.50 करोड़ का कलेक्शन कर डाला है। कुल मिलाकर देसी बॉक्स ऑफिस पर फिल्म ने अब तक 268.75 करोड़ रुपये की कमाई की है।

इस फिल्म ने वर्ल्डवाइड करीब 495.00 करोड़ रुपये की कमाई की है। ये विदेशों में भी शानदार कमाई कर रही है। फिल्म ने अब तक 176.10 करोड़ रुपये की कमाई की है। वहीं इंडिया में ग्रॉस कलेक्शन की बात करें तो इसने 318.90 करोड़ रुपये की कमाई की है।

ऋतिक रोशन की वॉर 2 की कमाई

अब बात करते हैं ऋतिक रोशन की वॉर 2 की, जो काफी कोशिशों के बाद भी रफ्तार तेज नहीं कर पाई। 14वें दिन फिल्म ने 2.50 करोड़ रुपये की कमाई की है। कुल मिलाकर फिल्म ने 229.75 करोड़ रुपये की कमाई की है। फिल्म ने वर्ल्डवाइड करीब 350 करोड़ रुपये की कमाई की है। वहीं विदेशों में फिल्म ने 76.00 करोड़ रुपये की कमाई की है।

ये रोल कुत्ता भी न करे...

* राज कुमार ने की थी रामानंद सागर की घनघोर बेइज्जती, धर्मेंद्र की झोली में गई थी फिल्म

मुंबई : राज कुमार, अपनी अनूठी शैली और दमदार अभिनय के लिए जाने जाते थे, एक बार रामानंद सागर की फिल्म आंखें की स्क्रिप्ट को अपने कुत्ते के सामने सुनाकर ठुकरा दिया था। उन्होंने निर्देशक से कहा कि यह रोल उनका कुत्ता भी नहीं करेगा। मशहूर बॉलीवुड अभिनेता राज कुमार अपने अनोखे अंदाज और दमदार अभिनय के लिए जाने जाते थे।

उन्हें आज भी पाकीजा, सौदागर, तिरंगा और नील कमल जैसी फिल्मों के लिए याद किया जाता है। अपने डायलॉग्स में जानी... का इस्तेमाल और गले पर हाथ फेरने का उनका अंदाज दिवंगत अभिनेता की पहचान बन गया था। राज कुमार अपनी शैली के साथ-साथ अपनी बुद्धि के लिए भी प्रसिद्ध थे। बॉलीवुड के गलियारों में उनके बारे में कई मजेदार किस्से मशहूर हैं। ऐसा ही एक किस्सा निर्माता-निर्देशक रामानंद सागर के साथ जुड़ा है, जिसके बारे में बहुत कम लोग जानते हैं।

राजकुमार ने कुत्ते से की हीरो की तुलना

1967 में, रामानंद सागर, राज कुमार को आंखें के लिए साइन करना चाहते थे। उन्होंने बॉलीवुड स्टार को फिल्म की कहानी सुनाई, लेकिन राजकुमार को स्क्रिप्ट पसंद नहीं आई। खबरों के मुताबिक, राजकुमार ने अपने पालतू कुत्ते को बुलाया और उसके सामने कहानी सुनाते हुए मजाक में पूछा, क्या तुम यह फिल्म करोगे? इसके बाद, उन्होंने रामानंद सागर से कहा, यह रोल मेरा कुत्ता भी नहीं करेगा। राजकुमार की इस बात से रामानंद सागर को गहरा सदमा लगा और वे गुस्से में वहां से चले गए। कथित तौर पर, निर्देशक राज कुमार के रूखे व्यवहार से बहुत आहत हुए और उन्होंने कुछ देर तक बात नहीं की। दिलचस्प बात यह है कि दोनों ने कभी साथ काम नहीं किया। बाद में 1968 में रिलीज हुई इस फिल्म में धर्मेंद्र ने लीड रोल किया और यह फिल्म सुपरहिट साबित हुई। इसे उनके करियर की सबसे सफल फिल्मों में गिना जाता है। सिर्फ 85 लाख रुपये के बजट में बनी इस फिल्म ने 6 करोड़ रुपये की कमाई की।

शिखर पहाड़िया को डेट कर रही हैं बॉलीवुड की 'परम सुंदरी' जाह्नवी कपूर

बेशुमार दौलत के मालिक हैं उनके बॉयफ्रेंड

मुंबई : बॉलीवुड की 'परम सुंदरी' यानी जाह्नवी कपूर इन दिनों खूब चर्चा में हैं। वे शिखर पहाड़िया को डेट कर रही हैं। एक्ट्रेस ने 'कॉफी विद करण' में शिखर संग अपने रिश्ते का खुलासा किया था। दोनों कभी साथ वेकेशन मनाते तो कभी मंदिर में दर्शन करते नजर आते हैं। वहीं फैंस भी इस जोड़ी को बेहद पसंद करते हैं। जाह्नवी कपूर के बॉयफ्रेंड शिखर पहाड़िया एक जाने-माने राजनीतिक परिवार से ताल्लक रखते हैं। उनके नाना सुशील कुमार शिंदे हैं, जो पूर्व में महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री रह चुके हैं। उनके पिता, संजय पहाड़िया, एक सक्सेफुल एंटरप्रेन्योर हैं। वहीं शिखर ने अपने पारिवारिक राजनीतिक संबंधों से अलग, अपना नाम बनाने में कामयाबी हासिल की है। उन्होंने बॉम्बे स्कॉटिश स्कूल और मुंबई के संस्कृति स्कूल से पढ़ाई की। उसके बाद धीरूभाई अंबानी इंटरनेशनल स्कूल में दाखिला लिया था। बता दें कि शिखर और जाह्नवी कपूर स्कूल के समय से फ्रेंड्स हैं। मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक शिखर पहाड़िया की कुल नेटवर्थ लगभग 84 करोड़ रुपये है। वे आलीशान लाइफ जीते हैं। उनकी कारों में एक लेम्बोर्गिनी एवेंटाडोर भी शामिल है। उन्होंने रियल एस्टेट में भी खूब इनवेस्टमेंट किया हुआ है। 331 से ज्यादा इंस्टाग्राम फॉलोअर्स के साथ, वह सोशल मीडिया पर भी पॉपुलर हैं।

सोनाक्षी सिन्हा की 'जटाधरा' में अहम भूमिका में नजर आएंगी शिल्पा शिरोडकर

जादू-टोना करने वाली महिला का होगा उनका किरदार

मुंबई : अभिनेत्री शिल्पा शिरोडकर काफी अरसे के बाद नई फिल्म 'जटाधरा' में नजर आएंगी। बॉलीवुड एक्ट्रेस सोनाक्षी सिन्हा की इस अपकमिंग फिल्म में वे भी अहम भूमिका दिखेंगी। मेकर्स ने बीते दिनों इसकी घोषणा की। उन्होंने मूवी से एक्ट्रेस के किरदार का फर्स्ट लुक पोस्टर भी जारी किया। इस पोस्टर में शिल्पा शिरोडकर एक जादू-टोना करने वाली महिला के रूप में हवन कुंड के सामने बैठी दिख रही हैं। उनके किरदार का नाम शोभा होगा। पोस्टर सामने आते ही वायरल हो गया है।

अपने किरदार के बारे में शिल्पा शिरोडकर ने बताया-'मैं जटाधरा का हिस्सा बनकर बेहद खुश और एक्साइटेड भी हूं। यह एक ऐसी फिल्म है, जो दर्शकों को निश्चित रूप से एक अलौकिक और रहस्यमयी सफर पर ले जाएगी। अविश्वसनीय और अद्भुत सीन के साथ यह एक ऐसी कहानी है जो लोगों को जरुर पसंद आएगी। फिल्म प्रोड्यूसर प्रेरणा अरोड़ा के साथ काम करने का एक्सपीरियंस भी उन्होंने शानदार बताया। एक निर्माता के रूप में वह सीन और छोटी-छोटी बारीकियों के प्रति बेहद समर्पित हैं। शिल्पा ने बताया-फिल्म में मेरा किरदार शोभा काफी शक्तिशाली है। यह बहुत जटिल और दिलचस्प है। मैंने इस किरदार को जीवंत करने में कोई कसर नहीं छोड़ी है। मैं उस समय के लिए एक्साइटेड हूं, जब लोग फिल्म देखेंगे।'

अभिषेक जायसवाल और वेंकट कल्याण द्वारा निर्देशित फिल्म 'जटाधरा' में शिल्पा शिरोडकर के अलावा सोनाक्षी सिन्हा, सुधीर बाबू और रवि प्रकाश अहम किरदार निभाते दिखेंगे। फिल्म में कमाल के वीएफएक्स देखने को मिलेंगे, जो दर्शकों का मनोरंजन करेंगे। इस साल के आखिर में इसे रिलीज करने की प्लानिंग है। फिलहाल इसकी रिलीज डेट तय नहीं की गई है। बताया जा रहा है कि फिल्म का ट्रेलर अगले महीने आ सकता है। मार्च में ही सोनाक्षी सिन्हा ने इसकी शूटिंग का दूसरा शेड्यूल खत्म किया था। इसकी जानकारी उन्होंने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर दी थी। रुस्तम के बाद 'जटाधरा' प्रेरणा अरोड़ा की जी स्टूडियो के साथ दूसरी फिल्म है। इससे पहले उन्होंने 'पैडमैन', 'परी', और 'बत्ती गुल मीटर चालू' जैसी फिल्में बनाई हैं।

अजब-गजब

ड्राई फ्रूट से भी महंगे...!

सिर से गिरे बाल बना रहे महिलाओं को मालामाल

मध्यप्रदेश के बुरहानपुर जिले में महिलाए अपने झड़े हुए बाल 3000-4000 प्रति किलो के भाव पर बेच रही हैं।

अभी तक आपने काजू बादाम और अन्य सामग्री बाजार में बिकते हुए देखी होगी, लेकिन क्या महिलाओं के शरीर के बाल को बिकते हुए देखा है, तो तब बात सही है।

मध्य प्रदेश के बुरहानपुर जिले में महिलाओं के सिर से निकलने वाले बाल बिकते हैं और इसका दाम भी ड्राई फ्रूट से दोगुना महंगा है। 3000 से 4000 किलो तक फेरी लगाने वाले इन बालों को खरीदते हैं। फेरी लगाने वाले असलम का कहना है कि इस व्यवसाय से बुरहानपुर में करीब 50 से अधिक लोग जुड़े हुए हैं, जो रोज सुबह बाल खरीदने के लिए लोगों के घर-घर जाते हैं। महिलाएं भी इन बालों को एकत्रित कर कर रखती है, जो सिर से निकले हुए बाल होते हैं. वही बाल महिलाओं के बिकते हैं, जो ₹4000 किलो तक बिक रहे है। मुंबई दिल्ली और कोलकाता की मंडी में इन बालों की सबसे अधिक डिमांड होती है. इस से नकली बालों की टोपियां और कई प्रकार के आइटम बनाए जाते हैं। इसलिए उनकी डिमांड दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही है।

शिकारपुरा क्षेत्र में रहने वाले असलम ने बताया कि दिल्ली मुंबई कलकत्ता में महिलाओं के सिर से निकलने वाले बालों की बहुत डिमांड है। इसलिए हम फेरी लगाकर महिलाओं से बाल खरीदने हैं। ₹3000 किलो तक हम खरीदते हैं और ₹4000 किलो तक हम व्यापारियों को बेचते हैं। बुरहानपुर जिले से रोजाना एक से डेढ़ किलो बाल एकत्रित हो जाते हैं। महिलाएं भी यह बाल जमा कर कर रखती है। जब भी फेरी लगाने वाला आता है तब बेच देती हैं।

ड्राई फ्रूट से दो गुनाह महंगे बिकने हैं बाल

महिलाएं जब भी सुबह के समय में अपने बाल नहा कर बनाती है। कंघी में जो महिलाओं के सिर से बाल निकलते हैं। वह बाल ड्राई फ्रूट से भी दोगुना महंगे बिकने हैं। ड्राई फ्रूट कि यदि बाजार में बात करें तो वह हजार से ₹1200 किलो तक बिकता है, लेकिन यह बाल तीन से ₹4000 किलो तक बिकते हैं और गली मोहल्ले में लोग खरीदने के लिए आने लगे हैं। महिलाएं भी 50 से 100 ग्राम बाल एकत्रित होने पर बेच देती है।

दुनिया के वह देश जहां सेल्फी लेना है सबसे खतरनाक

लोग जब कहीं भी घूमने जाते हैं तो फोटोज खींचना नहीं भूलते। आजकल फोटोज के नाम पर सेल्फी क्लिक करना काफी कॉमन हो गया है। लोग अपनी तस्वीरें खूबसूरत लोकेशन्स पर खींचना चाहते हैं। मगर क्या आप जानते हैं कि दुनिया में कुछ ऐसे भी देश हैं जहां पर सेल्फी लेना सबसे खतरनाक है? हाल ही में एक लॉ फर्म ने शोध किया है और उन देशों का खुलासा किया है जहां सेल्फी लेना मौत को दावत देने जैसा है।

न्यूयॉर्क पोस्ट की रिपोर्ट के अनुसार सोशल मीडिया के इस दौर में हर कोई परफेक्ट फोटो और सेल्फी लेना चाहता है लेकिन यही शौक कई बार लोगों की जान तक ले लेता है। हाल ही में द बार्बर लॉ फर्म की एक स्टडी ने खुलासा किया है कि दुनिया में सबसे ज्यादा सेल्फी से होने वाली मौतें और हादसे भारत में हो रहे हैं। अध्ययन के अनुसार, मार्च 2014 से मई 2025 के बीच दुनिया भर में हुए सेल्फी हादसों का विश्लेषण किया गया।

आंकड़े बताते हैं कि कुल घटनाओं में से 42.1% घटनाएं अकेले भारत में हुईं। भारत में इस दौरान 271 लोग सेल्फी के चलते हादसों का शिकार बने, जिनमें से 214 की मौत हुई और 57 घायल हुए। शोधकर्ताओं का कहना है कि भारत में घनी आबादी, जोखिम भरे स्थानों तक आसान पहुंच (जैसे ट्रेन की पटरी, खड़ी चट्टानें और ऊंची इमारतें) और सोशल मीडिया का गहरा प्रभाव इन हादसों के प्रमुख कारण हैं।

अन्य देशों की स्थिति

इस लिस्ट में संयुक्त राज्य अमेरिका दूसरे स्थान पर रहा, जहां कुल 45 हादसे हुए (37 मौतें और 8 चोटें). वहीं रूस तीसरे स्थान पर है, जहां 19 हादसे दर्ज हुए (18 मौतें और 1 घायल)। चौथे स्थान पर पाकिस्तान आता है जहां 16 मौतें हुई हैं। पांचवें पर ऑस्ट्रेलिया रहा, जहां 15 घटनाएं हुईं (13 मौतें और 2 घायल). इसके अलावा इंडोनेशिया (14), केन्या (13), ब्रिटेन (13), स्पेन (13) और ब्राज़ील (13) टॉप-10 देशों में शामिल हैं।

पहाड़ी इलाके में टहलने निकला शख्स, गुलाबी रंग की झील देखकर हुआ हैरान

प्रकृति अक्सर हमें अपनी अनोखी और विचित्र छटाओं से चौंकाती है। कभी आसमान का रंग असामान्य दिखता है तो कभी पानी की सतह पर ऐसी परतें बन जाती हैं जिन पर विश्वास करना मुश्किल हो। ऐसा ही एक हैरान कर देने वाला नज़ारा ब्रिटेन में देखने को मिला, जब एक व्यक्ति को टहलते समय अचानक एक गुलाबी रंग की झील दिखाई दी। 61 वर्षीय बैरी नाइट, जो इंग्लैंड के केंट क्षेत्र के शैपी में किंग चार्ल्स इंग्लैंड कोस्ट पाथ पर टहल रहे थे, इस दृश्य को देखकर हैरान रह गए। यह झील क्लीनबरो और लेजडाउन के बीच 21 मील लंबे पथ पर पड़ती है। 22 अगस्त को जब नाइट यहां सैर पर निकले तो उन्होंने अचानक इस गुलाबी रंग की झील को देखा। उन्होंने बताया- 'मैंने सोचा, हे भगवान! ये गुलाबी झील है, कहीं मेरी आंखें धोखा तो नहीं खा रही हैं? मैंने कभी ऐसा नज़ारा नहीं देखा था।' झील लगभग 213 फीट लंबी थी और उसका रंग चमकीला गुलाबी था, जिसके चारों ओर हल्की नीली परत सी बनी हुई थी। पहली नज़र में बैरी नाइट को लगा कि झील का रंग किसी औद्योगिक प्रदूषण या कृत्रिम रंग के कारण हुआ होगा। झील के आसपास कचरा फैला था और एक कार उलटी पड़ी हुई थी। इस वजह से उन्हें विश्वास हो गया कि पानी का यह रंग प्राकृतिक नहीं बल्कि प्रदूषण का परिणाम है। उन्होंने यहां तक कहा कि झील से एक अजीब सी गंध भी आ रही थी, जो सल्फर जैसी लग रही थी।

महिला ने सहेली के लिए बनाए नकली प्रेमी और नकली बेटी

धोखा देने के लिए लोग किसी भी हद तक जा सकता है। वे आपके आसपास एक अनोखा मायाजाल ही रच देते हैं। क्लेयर गिल्बर्ट और उसकी सहेली की कहानी भी ऐसी ही रोंगटे खड़े कर देने वाली है। इसमें क्लेयर गिल्बर्ट नाम की एक महिला ने अपनी सहेली को एक ऐसे शख्स के होने का यकीन दिलाया जो असल में था ही नहीं। उसने कहानियों का ऐसा भ्रमजाल रचा कि सहेली को लगा कि वह महिला को हिंसक रिश्ते से बचा रही है और खुद एक काल्पनिक रिश्ते में फंसती चली गई। उसे लगता रहा कि उसका एक प्रेमी है, और दोनों की एक बेटी है। इस सब के बीच महिला 15 साल तक सहेली का शोषण करती रही।महिला ने सहेली को यकीन दिलाया कि एक काल्पनिक शख्स असल में जिंदा है। सहेली उस शक्स से फोन पर बात करने लगी। असल में यह महिला ही खुद शख्स बन कर सहेली से बात कर थी। धीरे धीरे सहेली और 'शख्स' में प्यार हो गया। आलम ये था कि सहेली को यह तक यकीन दिला दिया गया कि उनकी (शख्स और सहेली की) एक बेटी भी है। किसी वेबसीरीज की उलझी हुई कहानी से लगने वाली ये असली किस्सा क्लेयर गिल्बर्ट का रचा था। क्लेयर ने ये सब केवल इसलिए किया कि वह सहेली का आर्थिक शोषण कर सके और इसमें वह 15 साल तक सफल भी रही।

उपराष्ट्रपति चुनाव में काफ़ी ज़्यादा क्रॉस-वोटिंग हुई : शुभेंदु

निज संवाददाता

आसनसोल : पश्चिम बंगाल विधानसभा में विपक्ष के नेता और वरिष्ठ भाजपा नेता शुभेंदु अधिकारी ने आसनसोल में एक राजनीतिक कार्यक्रम में भाग लेते हुए राज्य में चल रहे कई राजनीतिक मुद्दों पर कई महत्वपूर्ण बयान दिए। मीडिया को संबोधित करते हुए, अधिकारी ने सबसे पहले हाल ही में हुए उपराष्ट्रपति चुनाव में हुई क्रॉस-वोटिंग का ज़िक्र किया। उन्होंने कहा, ''एनडीए काफ़ी मज़बूत हो गया है और इस बार काफ़ी ज़्यादा क्रॉस-वोटिंग हुई है। आँकड़े इसे साफ़ तौर पर दर्शाते हैं।''अधिकारी ने आगे दावा किया कि कई टीएमसी सांसद भी क्रॉस-वोटिंग में शामिल थे। उन्होंने आगे कहा, ''मुझे इस मामले की ख़ास जानकारी है और दो टीएमसी सांसदों ने व्यक्तिगत रूप

से मेरे सामने इसे स्वीकार किया है।''नेपाल मुद्दे पर मुख्यमंत्री ममता बनर्जी की कथित चिंता की खबरों पर प्रतिक्रिया देते हुए, अधिकारी ने उन्हें निराधार बताया। उन्होंने कहा, ''मुख्यमंत्री की इसमें कोई भूमिका नहीं है। प्रधानमंत्री, विदेश मंत्री और राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार इस मामले को संभालने में पूरी तरह सक्षम हैं। हमारा देश मज़बूत है और हमारे नेता भी। यह हमारा कर्तव्य है कि हम प्रधानमंत्री के साथ एकजुट रहें और उन्हें अपना काम करने दें।

''एसआईआर प्रोटोकॉल पर ममता बनर्जी की हालिया टिप्पणी की ओर ध्यान केंद्रित करते हुए, अधिकारी ने कड़ा प्रहार किया और उनके रुख को ''असंवैधानिक'' बताया और उन पर ''देश की संवैधानिक संस्थाओं को सीधे चुनौती देने'' का आरोप लगाया। उन्होंने आरोप लगाया कि ममता बनर्जी द्वारा एसआईआर प्रोटोकॉल को लागू करने से इनकार करने का उद्देश्य एक विशेष समुदाय, जिसमें बांग्लादेश से आए अवैध प्रवासी और रोहिंग्या शरणार्थी शामिल हैं, की रक्षा करना है।अधिकारी ने अखिल भारतीय तृणमूल कांग्रेस (एआईटीसी) की भी आलोचना की और दावा किया कि पार्टी खुद को एक प्रमुख राजनीतिक ताकत के रूप में पेश करती है, ''वास्तव में, यह एक क्षेत्रीय पार्टी बनी हुई है।'' उन्होंने आगे बताया कि पार्टी ने हाल ही में पाँच जिलों के चुनाव अधिकारियों को बीएलओ-2 फॉर्म जमा किए हैं।अपने भाषण के समापन पर अधिकारी ने मुख्यमंत्री पर तुष्टिकरण की राजनीति करने का आरोप लगाया और चेतावनी दी कि ऐसी रणनीतियां ''पश्चिम बंगाल के लोकतांत्रिक ढांचे के लिए गंभीर खतरा पैदा कर सकती हैं।'' उन्होंने आरोप लगाया कि ममता बनर्जी की इस नीति से राज्य का विकास अवरुद्ध हो गया है। अधिकारी ने कहा कि सिर्फ वोट बैंक की खातिर तृणमूल कांग्रेस प्रमुख अल्पसंख्यकों को रिझाने का काम कर रही हैं। भाजपा के नेता ने कहा कि केंद्र की तरह बंगाल में भी डबल इंजन सरकार की जरूरत है। ऐसा होने पर ही इस राज्य का मुकम्मल विकास हो सकता है। अधिकारी ने कहा कि अगले साल विधानसभा चुनाव में तृणमूल कांग्रेस की सत्ता खत्म हो जाएगी।

ईसीएल के सीएमडी सतीश झा ने सलानपुर क्षेत्र का किया दौरा

निज संवाददाता

आसनसोल : ईसीएल के सीएमडी, सतीश झा ने सलानपुर क्षेत्र के गौरांगडी बेगुनिया ओसीपी और गौरांगडी (ए) ओसीपी का दौरा किया। सलानपुर क्षेत्र के महाप्रबंधक, श्री वाई.पी.के. सिंह, श्री एस.के. गौरांगडी ग्रुप ऑफ माइंस के एजेंट, श्री दत्ता और उनकी टीम ने सीएमडी का हार्दिक स्वागत किया।इस दौरे के दौरान, श्री झा ने दोनों खदानों की उत्पादन योजनाओं की समीक्षा की और निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए आवश्यक कदमों पर चर्चा की। उन्होंने सुरक्षा अनुपालन के सख्त पालन पर भी विशेष जोर दिया। इसके अतिरिक्त, सीएमडी ने खदानों में मानसून की तैयारी से संबंधित गतिविधियों की भी समीक्षा की।श्री झा ने क्षेत्र प्रबंधन के प्रयासों की सराहना की और टीम को सुरक्षा और स्थिरता को सर्वोच्च प्राथमिकता देते हुए परिचालन उत्कृष्टता प्राप्त करने की दिशा में अपने समर्पित प्रयासों को जारी रखने के लिए प्रोत्साहित किया।

कोलकाता जा रही यात्री बस से भारी मात्रा में नकदी बरामद

निज संवाददाता

दुर्गापुर : बिहार में विधानसभा चुनाव से पहले बिहार के भागलपुर से कोलकाता जा रही एक यात्री बस सेभारी मात्रा में नकदी बरामद की गई है। गुप्त सूचना वे के आधार पर,गुरुवार देर रात पूर्व र्दवान के मेमारी थाना क्षेतरें दर्गापुरएक्सप्रेस-वे पर स्थित पलसित टोल प्लाजा पर पुलिस ने एक निजीबस में छापा मारा। तलाशी के दौरान, पुलिस ने बस के भीतर दोबैगोंसेकुल 72 लाख रूपये नकद बरामद किए। बरामद किए गएपैसों का कोरईड वैध दस्तावेज नहीं दिखाने पर पुलिस नेबस केदोड्राइवर, एक कंडक्टर और एक यात्रीको गिरफ्तार कर लिया।गिरफ्तार किए गए लोगों की पहचान र नवीन कुमार और बबलूदास (दोनों ड्राइवर), कृष्ण दास (कंडक्टर) और शंभूनाथ बर्मा(यत्र) के रूप में हई है। पुलिस की प्रारंभिक पूछताछ मेंपताचलाहै कि ये सभी बिहार के भागलपुर और बांका जिलेके रहने वाले हैं।शुक्रवार को, पुलिस ने सभी आरोपियों को बर्धमान कोर्ट में पेशकिया और जांच के लिए 10 दिनों की पुलिस हिरासत की मांग की।पुलिस स्तेंके

अनुसार,गुप्त सूचना मिलने के बाद ही यह तलाशीअभियान चलाया गया। पुलिस ने मामले की उच्च-स्तरीय जांच शुरूकर दी है ताकि यह पता लगाया जा सके कि इतनी बड़ी रकम कहांसे आई, सका सोत क्या है और इसे कहां पहुंचाया जाना था।पैसेगिनने के लिए देर रात थाने में मशीन भी मंगाई गई थी। बिहार मेंविधानसभा चुनाव से ठीक पहलेइतनी बड़ी रकम की बरामदगी कोलेकर तरह-तरह के कयास लगाए जारहे है। मेमारी थाने की पुलिसनेमामले की गहन जांच शुरू कर दी है।

सुकांत मजूमदार ने नरेंद्र कप का शुभारंभ किया, एसआईआर को लेकर टीएमसी पर हमला बोला

निज संवाददाता

आसनसोल: केंद्रीय शिक्षा राज्य मंत्री और भाजपा नेता सुकांत मजूमदार ने गुरुवार को तृणमूल कांग्रेस पर तीखा हमला बोलते हुए दावा किया कि राज्य सरकार राज्य पहचान रजिस्टर को लेकर ''डरी और घबराई हुई'' है। वह आसनसोल के धडका पॉलिटेक्निक ग्राउंड में आयोजित नरेंद्र कप फुटबॉल टूर्नामेंट के उद्घाटन के अवसर पर बोल रहे थे। मजूमदार ने चुटकी लेते हुए कहा, '' एक शिक्षक या सर की तरह है, जो पढ़ाई न करने पर छात्रों के कान मरोड़ता है। इसी

तरह, राज्य के भ्रष्ट और शरारती राजनेताओं को सबक सिखाएगा।''मुख्यमंत्री ममता बनर्जी के इस रुख पर कि वह को स्वीकार करने के लिए तैयार हैं, लेकिन उन्होंने राज्य के स्वास्थ्य साथी स्वास्थ्य कार्ड को वैध पहचान के रूप में मान्यता देने की मांग की है, मजूमदार ने इस कदम का मज़ाक उड़ाया। उन्होंने कहा, ''यह किसी रिश्तेदार के घर पर की गई मनमौजी माँग जैसा है। स्वास्थ्य साथी कार्ड लोगों को उचित स्वास्थ्य सेवा प्रदान करने में विफल रहा हैइसे वैध पहचान पत्र कैसे माना जा सकता है?''इस बीच, भाजपा सांसद अर्जुन सिंह ने यह कहकर विवाद खड़ा कर दिया कि पश्चिम बंगाल में भी नेपाल जैसा जन-आंदोलन होना चाहिए। इस पर प्रतिक्रिया देते हुए, मजूमदार ने स्पष्ट किया, ''नेपाल जैसी स्थिति भारत में कभी नहीं होगी। यहाँ हमारे पास नरेंद्र मोदी जैसा मज़बूत प्रधानमंत्री है। तृणमूल को सत्ता से केवल लोकतांत्रिक आंदोलनों के ज़रिए ही हटाया जा सकता है।

पुरी के शंकराचार्य स्वामी श्री निश्चलानंद सरस्वती जी महाराज का आगमन

निज संवाददाता

आसनसोल : पुरी के शंकराचार्य स्वामी श्री निश्चलानंद सरस्वती जी महाराज का आनंदम रेजिडेंसी पंचगछिया में 11 सितंबर को आगमन होने जा रहा है उसी सिलसिले में आज आसनसोल के सेन रेले रोड इलाके में स्थित एक निजी होटल में एक संवाददाता सम्मेलन का आयोजन किया गया यहां पर आनंद वाहिनी के पश्चिम बंगाल और बिहार प्रदेश के अध्यक्षा निभा प्रकाश आसनसोल चैंबर ऑफ़ कॉमर्स के सचिव शंभूनाथ झा तथा गौरव मिश्रा पत्रकारों से रूबरू हुए इस मौके पर निभा प्रकाश ने कहा कि पुरी के शंकराचार्य का 11 सितंबर को पंचगछिया में आगमन हो रहा है वह 22 सितंबर तक रहेंगे उन्होंने कहा

कि पिछले साल भी हो यहां पर आए थे और तीन दिनों के लिए आसनसोल में उनके प्रवास हुआ था लेकिन इस साल वह 11 दिनों तक आसनसोल में रहेंगे और भक्तों से संबंध स्थापित करेंगे ।निभा प्रकाश में कहा कि अगर कोई उनसे दीक्षा लेना चाहता है तो उसका इंतजाम किया जाएगा और अगर कोई उनके दर्शन प्राप्त कर उनसे ज्ञान प्राप्त करना चाहता है तो उसकी भी व्यवस्था है उन्होंने कहा कि 11 से 22 सितंबर तक शंकराचार्य जी प्रतिदिन दोपहर 11:00 से 1:00 तक तथा शाम को भी एक घंटा दर्शन देंगे। उन्होंने कहा कि आसनसोल के लिए सौभाग्य का विषय है कि पितृपक्ष के दौरान पुरी के शंकराचार्य जी आसनसोल पधार रहे हैं उन्होंने आसनसोल की जनता से इस अवसर का लाभ उठाने का आग्रह किया और कहा कि वह ज्यादा से ज्यादा संख्या में आए और शंकराचार्य जी का आशीर्वाद प्राप्त करें ।

वही शंभू नाथ झा ने भी इस अवसर का लाभ उठाने के लिए आसनसोल की जनता से आग्रह किया उन्होंने कहा कि पिछले साल शंकराचार्य जी तीन दिनों के लिए आसनसोल आए थे लेकिन उनके प्रवास 5 दोनों का रहा है इन 5 दिनों में उन्हें आसनसोल से इतना लगा हुआ कि इस बार उन्होंने 11 दिनों तक आसनसोल में रहकर यहां के लोगों को आशीर्वाद देने का निर्णय लिया है उन्होंने सभी से आग्रह किया कि वह ज्यादा से ज्यादा संख्या में आए जिनका शंकराचार्य जी से दीक्षा लेनी है वह दीक्षा लेने और जो उनका आशीर्वाद लेना चाहते हैं वह भी आए।

दुर्गापुर में 40 करोड़ से निर्मित मॉडल कोर्ट भवन का उद्घाटन

निज संवाददाता

दुर्गापुर : कलकत्ता उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश टी एस शिवगणम ने दुर्गापुर के शहर के केंद्र में एक समारोह में दुर्गापुर अनुमंडल न्यायालय के नए भवन का उद्घाटन किया। उन्होंने रिमोट के माध्यम से नए न्यायालय भवन की पट्टिका का अनावरण किया। समारोह में अन्य लोगों के अलावा, राज्य के कानून और श्रम मंत्री मलय घटक, कलकत्ता उच्च न्यायालय के न्यायाधीश और पश्चिम बर्दवान जिला न्यायाधीश डॉ. अजय कुमार मुखर्जी, पश्चिम बर्दवान जिला और सत्र न्यायाधीश देबप्रसाद नाथ और अन्य न्यायाधीश, वकील और प्रशासनिक अधिकारी उपस्थित थे।आम आदमी की सुविधा के लिए डिजिटल तकनीक, उन्नत

सुरक्षा प्रणालियों और सुगम संचार अवसंरचना सहित सभी सुविधाओं को मिलाकर न्यायालय भवन को एक आदर्श स्वरूप दिया गया है।वादियों को न्यायालय में आते ही शीघ्र न्याय मिले और मामलों का त्वरित निपटारा हो, इस पर भी ध्यान दिया गया है। बाद में, दुर्गापुर स्थित सृजनी हॉल में दीप प्रज्वलित कर समारोह का औपचारिक उद्घाटन किया गया। उद्घाटन समारोह में कलकत्ता उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश टी. एस. शिवज्ञानम ने कहा कि न्याय पाना नागरिक का मौलिक अधिकार है। यह आदर्श न्यायालय उस न्याय को लोगों तक पहुँचाएगा। यदि यह आदर्श न्यायालय शुरू हो जाता है, तो न्यायिक व्यवस्था पर दबाव काफी हद तक कम हो जाएगा। साथ ही, आम आदमी को भी इसका अधिक लाभ होगा, ऐसा मुख्य न्यायाधीश का मानना है।

आसनसोल में सफाई कर्मियों को दिया गया स्पेशल किट

निज संवाददाता

आसनसोल : आसनसोल नगर निगम के आलोचना हाल में मेयर विधान उपाध्याय , निगम आयुक्त अदिति चौधरी, डिप्टी मेयर वसीम उल हक सेनेटरी विभाग के एमएमआईसी मानस दास आदि की उपस्थिति में 26 सफाई कर्मचारियों को सेप्टिक टैंक और हाइड्रेंन साफ करने के लिए विशेष तरह के किट दिए गए। मेयर विधान उपाध्याय और डिप्टी मेयर वसीम उल हक द्वारा सफाई कर्मचारियों को यह किट दिए गए।इस संदर्भ में विधान उपाध्याय ने कहा कि नगर निगम के सफाई कर्मचारी ही सेप्टिक टैंक और बड़े-बड़े ढके हुए हाई ड्रेन साफ करते हैं इसमें काफी खतरा रहता है इस लिए मुख्यमंत्री ममता बनर्जी द्वारा नगर निगम के सफाई कर्मचारियों के लिए यह विशेष परिधान दिया गया है जिसे पहनकर वह सुरक्षा के साथ इन कार्यो को कर पाएंगे आसनसोल नगर निगम के 280 सफाई कर्मचारियों को यह दिया जाएगा आज पहले चरण में 26 सफाई कर्मचारियों को यह किट प्रदान किया गया इसके अलावा डेंगू के रोकथाम के लिए जलाशयों में डालने के लिए गाप्पी मछली भी प्रदान की गई

अवैध कोयला तस्करी मामला : आसनसोल में फिर सक्रिय हुआ सिंडिकेट

निज संवाददाता

सालानपुर : पश्चिम बंगाल के आसनसोल मे अवैध कोयला के ऊपर चल रही सीबीआई और ईडी की जाँच के बीच एक बार फिर अवैध कोयले का सिंडिकेट शुरू हो गया है। बताया जा रहा है कि इस बार आसनसोल अवैध कोयले के सिंडिकेट का जिम्मा किसी शशि नाम के व्यक्ति को मिला है। शशि भी अपनी कमर पूरी तरह कसकर अवैध कोयला तस्करी के कारोबार में पूरी तरह उतर चुका है और सिंडिकेट का जिम्मा बखूबी निभा रहा है। शशि ने अवैध कोयले के सिंडिकेट के मिले इस जिम्मे से खुश होकर शशि को यह आश्वासन भी

दिया गया है कि वह निश्चिंत रहे और बेखौफ काम करे उसको किसी भी प्रकार की कोई दिक्कत और समस्या नहीं होगी। उनको जानकारी दिए बगैर उनका सौदा कर रहे थे, जब सौदा तय हो गया तब शशि और भी फूल फॉर्म में आ गया और कुछ इस कदर अपने सिंडिकेट के कार्य में लग गया कि वह झारखंड और बंगाल की सीमा पर कुछ इस कदर कोहराम मचाना शुरू कर दिया कि उसके कोहराम से झारखंड के कई व्यवसायी त्राहिमाम कर रहे हैं। जिसकी एक तस्वीर दस सितंबर को प्रकाश में आई थी। निरसा तेतुलिया हाडकोक भट्ठा से हाडकोक कोयला लेकर कोलकाता जा रहे दो ट्रकों को बंगाल सीमा के डिबुडीह चेकपोस्ट पर शशि के गुर्गो ने धर दबोचा। वाहन कोलकाता जाने के लिये आठ से नौ हजार रुपए की मांग कर रहे थे, यह कहकर कि बंगाल में पैड चालू हो गया है, जिसका सारा जिम्मा किसी शशि का है, पैसे अगर नही मिले तो गाड़ी का चक्का एक इंच भी नही खिसकेगी चाहे जो हो जाए, वाहन चालक ने जब सिंडिकेट के गुर्गो द्वारा गाड़ी पकड़कर रखे जाने की खबर अपने मालिक को दी तो मालिक वाहन में लदे हाड कोक कोयले का तमाम कागजात लेकर झारखंड निरसा से बंगाल डिबुडीह पहुँच गए। घटना की जानकारी चौरंगी पुलिस को दी गई इसके अलावा कुल्टी थाना को भी पूरी जानकारी वाहन मालिक द्वारा दी गई।

अभिनेत्री सुमन चौधरी ने ट्रांसजेंडर समुदाय के समर्थन में देवी दुर्गा का वेश धारण किया

नवदेश्वर गोप (विक्की)

आसनसोल : एक साहसिक और विचारोत्तेजक पहल के तहत, लोकप्रिय टेलीविजन अभिनेत्री सुमन चौधरी ने देवी दुर्गा की भूमिका निभाई है - किसी मंचीय प्रस्तुति के लिए नहीं, बल्कि ट्रांसजेंडर समुदाय के संघर्षों को उजागर करने के उद्देश्य से एक प्रतीकात्मक फोटोशूट के लिए। सुमन का मानना है कि कई ट्रांसजेंडर लोग, भले ही पुरुष के रूप में पैदा होते हैं, अपने भीतर स्त्रीत्व - एक माँ का सार - धारण करते हैं। वे कहते हैं, ''वे भी दुर्गा हैं,'' और इस बात पर ज़ोर देते हैं कि उनकी पहचान को स्वीकार किया जाना चाहिए और उसका जश्न मनाया जाना चाहिए। अर्धनारीश्वर- शिव और शक्ति, या राधा और कृष्ण के मिलन - की पौराणिक अवधारणा से तुलना करते हुए, सुमन बताते हैं

कि प्रत्येक प्राणी पुरुष और स्त्री दोनों शक्तियों को धारण कर सकता है। उनका संदेश स्पष्ट है: असली राक्षस वे पूर्वाग्रह और कठोर मानसिकताएँ हैं जो समाज उन लोगों पर थोपता है जो अपने सत्य को जीने का चुनाव करते हैं। हर साल, दुर्गा पूजा से पहले, महिलाएँ अक्सर हरे-भरे काश के खेतों में उत्सव के फोटोशूट में भाग लेती हैं, जो देवी के आगमन का प्रतीक है। हालाँकि, ऐसे शूट के लिए किसी पुरुष का दुर्गा का वेश धारण करना लगभग अनसुना ही है। इस अनूठी पहल के साथ, सुमन ने परंपरा को तोड़ा है।कई लोकप्रिय बंगाली टीवी धारावाहिकों में अपने काम और प्रसिद्ध गेम शो दादर दीदीगिरी से जुड़े होने के लिए जाने जाने वाले सुमन ट्रांसजेंडर और समुदाय के साथ इस तरह खड़े होना चाहते थे जिससे बातचीत शुरू हो सके। यह फोटोशूट पेशेवर मेकअप कलाकारों और फ़ोटोग्राफ़रों के साथ किया गया था, जो उनके गंभीर इरादे को रेखांकित करता है। हालाँकि वह स्वीकार करती हैं कि इस साहसिक कदम के लिए उन्हें ट्रोलिंग का सामना करना पड़ा है, सुमन बेफिक्र हैं। ''मैं एक पुरुष हूँ,'' वे कहते हैं, ''लेकिन ऐसे पुरुष भी हैं जो मानते हैं और गहराई से महसूस करते हैं कि वे महिला हैं। मेरा संदेश है कि उन्हें भी महिला के रूप में स्वीकार किया जाना चाहिए। वे अपने भीतर दुर्गा का अवतार हैं। देवी का वेश धारण करके, मैं यह संदेश देना चाहता हूँ कि उनके मार्ग में बाधा डालने वाले सामाजिक राक्षसों का विनाश किया जाना चाहिए, जैसे दुर्गा ने महिषासुर का विनाश किया था।'' सुमन चौधरी का यह अद्भुत अभिनय महज एक फोटोशूट नहीं है - यह एक प्रगतिशील समाज का आह्वान है, जो विविधता, सहानुभूति और स्वीकृति को अपनाता है।

फिर शिखर पर : एशियाई हॉकी में भारत की शानदार जीत

- भारतीय पुरुष हॉकी टीम ने फिर हासिल की महाद्वीपीय बादशाहत
- दक्षिण कोरिया को 4-1 से हराकर बना विजेता

शुभ्रांशु राय

प्राचीन मगध की राजधानी रहे राजगीर ने इस सितंबर भारतीय खेल इतिहास का एक नया अध्याय देखा। बिहार स्पोर्ट्स यूनिवर्सिटी हॉकी स्टेडियम की जगमगाती रोशनी के नीचे भारतीय पुरुष हॉकी टीम ने महाद्वीपीय बादशाहत फिर हासिल की और फाइनल में अपने चिर-प्रतिद्वंद्वी दक्षिण कोरिया को 4-1 से हराकर 2025 पुरुष एशिया कप अपने नाम किया।एक ऐसे देश के लिए जो हॉकी को उतना ही जीता है जितना क्रिकेट का सपना देखता है, यह जीत सिर्फ एक ट्रॉफी से कहीं अधिक थी। यह थी पुनर्जागरण की गूंज, विश्वास की लौ और भारत की गौरवशाली हॉकी परंपरा की याद। आठ साल के लंबे इंतजार के बाद, एशिया कप फिर भारत के पास है।यादगार फाइनलमैच की शुरुआत मानो बिजली की चमक से हुई। दर्शक अपनी सीटों पर ठीक से बैठे भी नहीं थे कि सुखजीत सिंह ने पहले ही मिनट में गोल दाग दिया। उनका रिवर्स हिट, शुद्ध प्रवृत्ति और ताकत से भरा, सीधे जाल में समा गयायह ऐलान करते हुए कि भारत अब पीछे हटने वाला नहीं।पांच बार का चैंपियन दक्षिण कोरिया हतप्रभ रह गया। भारतीय खिलाड़ियों ने ऊंचा दबाव बनाया, स्मार्ट रोटेशन किया और विपक्षी से गलतियां कराईं। हाफ टाइम तक दिलप्रीत सिंह ने दूसरा गोल कर बढ़त दोगुनी कर दी। 45वें मिनट में उनका एक और शानदार गोल हुआ और स्कोरबोर्ड पर 30 चमक रहा था। पूरे राजगीर की पहाड़ियों में ''भारत, भारत'' के नारे गूंज रहे थे।हालांकि कोरिया ने सन दैन के जरिए एक गोल वापिस किया, लेकिन भारत ने तुरंत जवाब दिया। अनुभवी डिफेंडर अमित रोहिदास ने 50वें मिनट में पेनल्टी कॉर्नर से सटीक वार कर रात को यादगार बना दियाभारत ने 41 से शानदार जीत दर्ज की।राजगीर का सफरभारत की एशिया कप यात्रा आसान नहीं रही।

सुपर 4 चरण में कोरिया से रोमांचक ड्रॉ ने कमजोरियों को उजागर किया, लेकिन वही एक निर्णायक मोड़ भी साबित हुआ। टीम ने सबक लिया और वापसी करते हुए मलेशिया को 41 तथा चीन को 70 से रौंद दिया।फाइनल तक पहुंचते-पहुंचते भारत ने आक्रमण और रक्षा दोनों को पैना कर लिया था। जीत के बाद कप्तान हरमनप्रीत सिंह ने कहा-लड़कों ने चरित्र दिखाया। हमने गलतियों का विश्लेषण किया, उन्हें सुधारा और और भी मजबूत होकर लौटे।यह जीत क्यों अहम है?यह खिताबभारत का चौथा एशिया कप ताजउसे टूर्नामेंट इतिहास में केवल दक्षिण कोरिया से पीछे रखता है। लेकिन ट्रॉफी से आगे भी, इस जीत के कई मायने हैं :वर्ल्ड कप टिकट : इस विजय से भारत ने 2026 एफआईएच पुरुष हॉकी वर्ल्ड कप (नीदरलैंड्स और बेल्जियम) के लिए अपनी जगह पक्की कर ली।बेंच स्ट्रेंथ का पुनर्जागरण : सुखजीत और दिलप्रीत जैसे युवा सितारों ने भारत की गहराई साबित की, वहीं रोहिदास और हरमनप्रीत जैसे दिग्गजों ने नेतृत्व दिया।प्रतीकात्मक स्थल : बिहार के राजगीर में जीतजहां हॉकी का पारंपरिक गढ़ नहीं रहायह दर्शाती है कि खेल का दायरा देशभर में फैल रहा है।मैदान से परे गूंजचारों ओर से प्रतिक्रियाएं उमड़ीं।प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने इस जीत को ''हर भारतीय के लिए गर्व का क्षण'' बताया, जबकि कोच क्रेग फुल्टन ने इसे ''निरंतर मेहनत और अनुशासन का इनाम'' कहा।सड़कों पर जश्न का माहौल पुरानी यादें ताज़ा कर रहा थामानो भारत के सुनहरे हॉकी युग की झलक लौट आई हो। दिल्ली, अमृतसर, रांची और खासकर पटना की गलियों में झंडों संग नाचते प्रशंसक मानो किसी स्थानीय पर्व का हिस्सा बन गए।आगे की राहएशिया कप जीत एक मील का पत्थर है, लेकिन साथ ही आने वाली बड़ी चुनौतियों की याद भी।

2026 वर्ल्ड कप सामने है, और वैश्विक मंच पर निरंतरता ही असली परीक्षा होगी। हरमनप्रीत ने साफ कहा-एशिया कप खास है, लेकिन हमारी नज़र वर्ल्ड कप पर है।फिलहाल, यह जीत खिलाड़ियों और प्रशंसकों की है। राजगीर वह रात हमेशा याद रखेगा जब भारतीय हॉकी ने एशिया पर फिर कब्ज़ा जमाया।

छोटे से यूरोपीय शहर के फुटबॉल क्लब के शानदार उदय की कहानी

- यूरोप की सर्वश्रेष्ठ प्रतियोगिता चैंपियंस लीग में पहुंचने के कगार पर खड़ा है

निज संवाददाता : नॉर्वे का छोटा सा शहर बोडो। जहां सिर्फ 41 हज़ार लोग रहते हैं। इस शहर का क्लब बोडो/ग्लिम्ट यूरोप की सर्वश्रेष्ठ प्रतियोगिता चैंपियंस लीग में पहुंचने के कगार पर खड़ा है।बोडो/ग्लिम्ट, जिसे इसके पूर्व नाम ग्लिम्ट से भी जाना जाता है, नॉर्वे के नॉर्लैंड काउंटी के बोडो नगर पालिका के बोडो शहर का एक नॉर्वेजियन पेशेवर फुटबॉल क्लब है। क्लब की स्थापना 2016 में हुई थी। 1975 की पहली टीम बनी जिसने राष्ट्रीय खिताब जीता। इस क्षेत्र की यह पहली टीम थी जिसने राष्ट्रीय लीग जीती और राष्ट्रीय लीग प्रतियोगिता जीती।लेकिन फिर यह टीम पिछड़ गई। अस्सी के दशक में भयानक आर्थिक संकट ने क्लब को इतना जकड़ लिया कि क्लब का लाइसेंस रद्द होने का सवाल तक उठ खड़ा हुआ। हालांकि क्लब बंद नहीं हुआ, लेकिन नब्बे के दशक में क्लब के लिए देश की प्रथम श्रेणी के क्लबों की पंक्ति में शामिल होना संभव नहीं हो पाया। यहां तक कि 8 साल पहले की बात है, टीम नॉर्वे की दूसरी डिवीजन लीग में खेलती थी। अविश्वसनीय विकास करते हुए उस टीम ने पिछले 5 सालों में 4 बार नॉर्वे की लीग खिताब जीता है।सिर्फ इतना ही नहीं, पिछले साल वे यूरोपा लीग के सेमीफाइनल में भी खेले थे। उस बार दोनों लेग में उन्हें टोटेनहैम के सामने हार का सामना करना पड़ा।

हालांकि, यूरोपा के विजेता टोटेनहैम के खिलाफ उनका खेल ही क्या कम है। नॉर्वे का पहला ऐसा क्लब जिसने यूरोपा जैसे मंच पर सेमीफाइनल खेला, यह कोई मामूली बात नहीं है। उस बार उन्होंने लाजियो को पेनल्टी पर हराया भी था।कुछ दिन पहले चैंपियंस लीग के प्ले-ऑफ राउंड की पहली लेग में ऑस्ट्रिया के क्लब स्टुर्म ग्राज को 5 गोल से धुलाई देकर उन्होंने धूम मचा दी।

वापसी मैच में अगर वे 5 गोल की हार से बच जाते हैं, तो वे चैंपियंस लीग के ग्रुप चरण में पहुंच जाएंगे।दूसरी डिवीजन से उठकर आने वाला एक क्लब रियाल मैड्रिड, लिवरपूल, बायर्न म्यूनिख, बार्सिलोना, मैनचेस्टर सिटी जैसी दानवीय टीमों के साथ मंच साझा करेगा। उस छोटे से बोडो शहर के निवासी उत्सव मनाएंगे, किसी की आंखों से अनजाने ही आंसू निकल आएंगे। और ऐसे ही दिनों में तो फुटबॉल जीतता है। सबके प्यारे खेल फुटबॉल।

कांस्य से शुरुआत : सीएएफए नेशंस कप 2025 में भारत का ऐतिहासिक पदार्पण

निज संवाददाता : फुटबॉल में स्थिरता की तलाश में जुटे एक देश के लिए, सीएएफए नेशंस कप 2025 में भारत का पदार्पण साहस, आश्चर्य और उम्मीद की दास्तान बन गया। ताजिकिस्तान की पहाड़ियों की निगरानी में, ब्लू टाइगर्स न केवल मध्य एशिया की शीर्ष टीमों से लड़े, बल्कि कांस्य पदक लेकर लौटे। यह भारतीय फुटबॉल के अगले युग की नींव रखने वाली एक ऐतिहासिक उपलब्धि थी।हिसोर में धमाकेदार आगाज़भारत बाहरी चुनौतीकर्ता के रूप में ताजिकिस्तान पहुंचा था। लेकिन शुरुआती मैच में कहानी पलट गई। मेज़बान ताजिकिस्तान के खिलाफ भारत ने तेज़ शुरुआत कीअनवर अली ने पांचवें मिनट में हेडर से गोल किया और कुछ ही मिनट बाद संदेश झिंगन ने तेरहवें मिनट में दूसरा गोल दाग दिया।मेज़बान टीम ने वापसी की कोशिश की, लेकिन भारत ने मजबूती से डटकर खेला। गुरप्रीत सिंह संधू ने पेनल्टी रोककर मैच का रोमांच बढ़ा दिया। 21 की जीत सिर्फ तीन अंक नहीं थी, बल्कि लगभग दो दशक बाद ताजिकिस्तान पर भारत की पहली जीत थी, जिसने टूर्नामेंट को जीवंत कर दिया।कठिन परीक्षा : ईरान से भिड़ंतएशियाई दिग्गज ईरान से परियों जैसी शुरुआत का सामना हुआ। फीफा रैंकिंग में भारत से कहीं ऊपर, ईरान ने अपनी ताकत और रफ्तार से दबदबा बनाया और भारत को 30 से हराया। यह हार भारत के लिए हकीकत की याद दिलाने वाली थीशीर्ष स्तर और चुनौतीकर्ताओं के बीच की खाई साफ हो गई।लेकिन इस हार ने यह भी दिखाया कि

भारत बिखरा नहीं। टीम ने दोबारा संगठन बनाया, अनुशासन बनाए रखा और बड़ी हार से बची।ड्रॉ, मगर मायने भराअगली चुनौती के रूप में अफगानिस्तान था। जुनून और शारीरिक ताकत से लैस यह मैच 00 ड्रॉ पर खत्म हुआ। भले ही स्कोरबोर्ड खाली रहा, लेकिन रणनीतिक तौर पर यह भारत के लिए अहम था। बेहतर हेड-टू-हेड रिकॉर्ड की वजह से भारत तीसरे स्थान के लिए प्लेऑफ़ में पहुंचा।कप्तान हरमनप्रीत सिंह ने कहा-हमने दिखाया कि हम मुश्किल मैचों से लड़ सकते हैं, सिर्फ जीत के पीछे नहीं भागते। ड्रामा में सिला कांस्यतीसरे स्थान के लिए ओमान के खिलाफ मैच मंच तैयार था। 90 मिनट बाद स्कोर 11 पर अटका रहा और फिर खेल पहुंच गया पेनल्टी शूटआउट तकफुटबॉल का सबसे रोमांचक क्षण।गुरप्रीत फिर बने तारणहार, और साहल अब्दुल समद तथा रहीम अली जैसे युवाओं ने नर्वस पलों में भी संयम दिखाया। भारत ने शूटआउट 32 से जीतकर पहली बार सीएएफए पोडियम फिनिश हासिल किया। कांस्य में सुनहरी अहमियतपदार्पण में तीसरा स्थान बताता है कि भारत दक्षिण एशिया से आगे बढ़ने को तैयार है। खालिद जमील की रणनीतिक छापनए कोच ने संरचना और आज़ादी का संतुलन बनाया, यह साबित करते हुए कि भारतीय खिलाड़ी महाद्वीपीय स्तर पर तेज़ी से ढल सकते हैं।गुरप्रीत, फिर दीवार साबितटूर्नामेंट में दो पेनल्टी बचाकर उन्होंने एशिया के सर्वश्रेष्ठ गोलकीपरों में अपनी पहचान फिर मजबूत की। वैश्विक आकांक्षाएंईरान, ताजिकिस्तान और ओमान के खिलाफ मुकाबले ने विश्व कप क्वालीफायर से पहले भारत को बहुमूल्य अनुभव दिया। गूंज और प्रतिक्रियाएंगोवा के कैफ़े से लेकर कोलकाता के क्लबों तक, कांस्य पदक ने ऐसा उत्साह जगाया जो शायद ही कभी सैफ टूर्नामेंट के बाहर महसूस हुआ हो।आगे की राहसीएएफए नेशंस कप 2025 भले ही खिताब के साथ खत्म न हुआ हो, लेकिन इसने भारत को कुछ और कीमती दियाआत्मविश्वास और विश्वसनीयता। विश्व कप क्वालीफायर नज़दीक हैं, और भारत अब केवल उम्मीद नहीं बल्कि सबूत भी साथ ले जा रहा है कि वे एशिया के प्रतिस्पर्धी घेरे में अपनी जगह रखते हैं।ब्लू टाइगर्स ताजिकिस्तान से कांस्य पदक गले में और विश्वास दिल में लेकर लौटे हैं। शायद यही भारतीय फुटबॉल के बड़े जागरण की शुरुआत है।

महामहिम राज्यपाल को सम्मानित करते हुए विष्णु दास जी मित्तल व सज्जन सराफ

महामहिम राज्यपाल असीम घोष हरियाणा से वार्तालाप करते हुए विष्णु दास मित्तल व गोविंद राम जी अग्रवाल

खंडहर में न तब्दील हो जाए एकमात्र त्रिनेत्र गणेश मंदिर

गोविन्द अग्रवाल

विश्व का एकमात्र विश्व धरोहर रणथंभौर किले का ऐतिहासिक त्रिनेत्र गणेश मंदिर होने के बावजूद गजानन-भक्तों को उनकी चौखट तक पहुंचने में अव्वल तो सीढ़ियां चढ़ने में कलेजा मुंह को हो आता है। जबकि मंदिर-कमिटी की ओर से श्रद्धालुओं की ज़द्दोजहद कम करने के मद्देनज़र रोप-वे बनाने की पेशकश बहुत पहले ही कर दी गयी थी। मंदिर तक सुगमता से पहुंचने में प्रस्तावित रोप-वे परियोजना का पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय (परिवेश) की ओर से आकलन करते हुए विश्व धरोहर स्थल के मूल्यों का ध्यान भी रखा गया था। लेकिन उसकी औपचारिकताएं अंज़ाम तक आने का नाम ही नहीं ले रहीं। मंत्री जी के हालिया आश्वासन के बाद जाने कब तक यात्रियों को राहत नसीब होगी। 10वीं सदी में रणथंभौर नरेश हमीर देव का बनवाया यह दुर्लभ देवालय आस्था का अद्वितीय केंद्र होकर भी अपेक्षित सुविधाओं से वंचित है। बुज़ुर्ग भक्तों की दिक्कतों से प्रशासन का कोई सरोकार नहीं। इतना ही नहीं, क्षतिग्रस्त किले की दीवार मरम्मत करने में पुरातत्व विभाग की ज़रूरी मुस्तैदी नज़र नहीं आती है। जबकि इस हेरिटेज मंदिर के स्थापत्य और परंपरा को अक्षुण्ण रखने का प्रावधान यूनेस्को की ओर से जगज़ाहिर है। साथ ही इलेक्ट्रिक शटल बसों के न होने से सवाईमाधोपुर सहित आसपास के निवासी अपने आराध्य के दर्शन से चूक जाते हैं। ग़ौरतलब है कि आस्था का सैलाब उमड़ पड़ा त्रिदिवसीय लक्खी मेला इस बार प्रशासन को दोगुनी चुनौती दे गया। क्योंकि गणेश मंदिर परिक्रमा मार्ग पर बाघों के पैरों के निशान देखे जाने से विघ्नहर्ता के श्रद्धालुओं की सुरक्षा के तहत सामूहिक यात्रा करने का आग्रह करते हुए अवैध रास्तों को बंद कर देने की मजबूरी आन पड़ी थी। कहना न होगा कि रणथंभौर त्रिनेत्र गणेश लक्खी मेला ख़त्म होते ही यात्रियों की सुरक्षा और सहूलियतों से जुड़े सवालात बरबस मुंह बाये खड़े हो गये हैं। अव्वल तो रणथंभौर के सैलानियों से देशभर में सबसे ज़्यादा राजस्व वसूली के बावजूद उसी अहाते के गणपति मंदिर के यात्री अवहेलित हैं। सनद रहे, हाल ही में रणथंभौर टाइगर रिजर्व एरिया से मंदिर परिक्रमा मार्ग के ढाई-तीन कि.मी. में 14 बाघ-बाघिनों के मूवमेंट देखे जाने से पहले 16 अप्रैल को निहत्थे मासूम बच्चे कार्तिक सुमन को दो साल की कनकटी बाघिन ने धर दबोचा था। सुमन का परिवार 17 मई को होनेवाली उसके चाचा की शादी का न्योता विनायक को देने गया था। वापसी में जिस राह से श्रद्धालु गुज़रते हैं, वहीं यह दर्दनाक हादसा हो गया। चार-पांच माह पहले वही शावक एक सैलानी पर टूट पड़ा था। उल्लेखनीय है, यह पूरा इलाका क्रिटिकल टाइगर हैबिटेट के दायरे में शामिल है। आनेवाले दिनों में वन विभाग की ओर से ट्रैकिंग और मॉनिटरिंग सिस्टम फौरी तौर पर लागू नहीं किये जाने से ऐसे ख़ौफ़नाक हादसों का अंदेशा रह जायेगा।बताना ज़रूरी है कि रणथंभौर में बीते 38 सालों में 20 लोग आदमखोर बाघों के खूंख्वार पंजों के निशाने पर आ चुके हैं। हालांकि गणेश मंदिर के पैदल यात्रियों की आवाजाही पर रोक लगाने का प्रशासनिक निर्णय लिया गया था। ख़ासतौर से अथर्व पूजन के दिन बुधवार को भक्तों का हुज़ूम देखते ही बनता है। स्थानीय निवासियों का आक्रोश है कि वन विभाग को ऐसी जानलेवा घटनाओं की आशंका पहले से होने पर भी महज़ आम नागरिकों का प्रवेश वर्जित नोटिस चस्पां कर अपने हाथ खड़े कर लेते हैं।

केवल आमजन ही नहीं, मंदिर के पुजारी और रेंजर तक बाघ के खूनी जबड़े से जान नहीं छुड़ा पाये। इन दोनों की सुरक्षा का इंतज़ाम नहीं किये जाने पर भी उंगलियां उठीं। ऐसे ख़ौफ़भरे हालात में यह सवाल उठ खड़ा होना बेहद लाज़िमी है कि रणथंभौर डेथ ज़ोन बनता जा रहा है। सवाईमाधोपुर शहर से तक़रीबन 13.5 कि.मी. की दूरी पर अरावली और विंध्य पर्वत शृंखलाओं के संगम पर पसरा रणथंभौर सैकड़ों वर्षों से क़ुदरती वादियों, शाही शौक़त और मज़हबी आस्था का मरक़ज़ बना हुआ है। फिर भी बारिशी क़हर से बनती खाई और नालों में उफान सड़कों को खस्ताहाल बना ही देती है। ऐसे में श्रद्धालु बुरे फंसते ही हैं। गोया आसोज माह में सावन की वापसी। लेकिन भक्त हैं कि लंबोदर के धोक खाने पर अड़े रहते हैं।आश्चर्य इस बात का है कि रणथंभौर का त्रिनेत्र गणेश मंदिर पूरी दुनिया में इकलौता ऐसा मंदिर है, जिसमें सिद्धिदायक सपरिवार विराजित होकर भी धर्म का परचम लहरानेवालों को उनके भक्तों की उपेक्षा खलती नहीं।

चैंपियंस लीग टू अभियान में मोहनबागान की नई चुनौती और रोनाल्डो के सामने एफसी गोवा

सम्राट मिश्र

आगामी 16 सितंबर को विवेकानंद युवा भारती क्रीड़ांगन में मोहनबागान सुपर जाइंट एएफसी चैंपियंस लीग टू का अभियान शुरू करने जा रहा है। उनका पहला प्रतिद्वंद्वी तुर्कमेनिस्तान का क्लब आहाल एफसी होगा । 15 अगस्त 2025 को मलेशिया के कुआलालंपुर में एएफसी चैंपियंस लीग टू (एसीएल टू) का आधिकारिक ड्रॉ समारोह आयोजित हुआ था। एशिया की दूसरी सबसे बड़ी क्लब प्रतियोगिता में भारत की दो टीमें मोहनबागान सुपर जाइंट और एफसी गोवा ग्रुप स्टेज में देश का प्रतिनिधित्व करेंगी। पश्चिमी क्षेत्र में मोहनबागान को ग्रुप सी और एफसी गोवा को ग्रुप डी में जगह मिली है। ग्रुप सी में मोहनबागान के प्रतिद्वंद्वी होंगे ईरान का सेपाहान एससी, जॉर्डन का अल हुसैन एससी और तुर्कमेनिस्तान का आहाल एफसी। ड्रॉ समारोह में मोहनबागान की ओर से टीम मैनेजर अभिषेक भट्टाचार्य और मीडिया मैनेजर रतन चक्रवर्ती मौजूद थे। पिछले वर्ष भू-राजनीतिक कारणों से मोहनबागान को प्रतियोगिता से हटना पड़ा था। इस बार उनकी वापसी ने समर्थकों के बीच नई उम्मीदें जगा दी हैं। आइए एक नज़र डालें मोहनबागान के एशिया अभियान के प्रतिद्वंद्वियों पर

सेपाहान एससी (ईरान)

ईरान के इस्फ़हान स्थित यह क्लब घरेलू फुटबॉल का बड़ा नाम है। कई बार पर्शियन गल्फ प्रो लीग का खिताब जीत चुका है और एशियाई क्लब फुटबॉल में भी इसकी खास पहचान है। 2007 में एएफसी चैंपियंस लीग के फाइनल में पहुंचकर इसने ईरानी फुटबॉल के इतिहास में सुनहरा अध्याय रचा। उसी साल क्लब ने फीफा क्लब विश्वकप में भी हिस्सा लिया। उनका होमग्राउंड नक्श-ए-जहान स्टेडियम एशिया के सबसे बड़े और आधुनिक स्टेडियमों में गिना जाता है। खास बात यह है कि 1979 के बाद 2024 सीज़न में पहली बार उनकी महिला समर्थकों को स्टेडियम में प्रवेश की अनुमति मिली, जो ईरानी फुटबॉल के इतिहास में मील का पत्थर है।

अल हुसैन एससी (जॉर्डन)

जॉर्डन की शीर्ष लीग की टीम अल हुसैन क्लब को मध्य-पूर्व का उभरता हुआ नाम माना जाता है। यह देश की सबसे मजबूत टीमों में से एक है और एसीएल-टू में लगातार प्रयासरत है, हालांकि बड़ी सफलता अभी तक हाथ नहीं लगी। इस क्लब के लिए कई जॉर्डन राष्ट्रीय टीम के खिलाड़ी खेलते हैं, जिनका हाल में विश्वकप के लिए सीधा क्वालीफिकेशन हुआ है।

आहाल एफसी (तुर्कमेनिस्तान)

हालांकि भारतीय दर्शकों के लिए कम परिचित, लेकिन तुर्कमेनिस्तान का अहाल एफसी

अपनी घरेलू लीग में स्थिर प्रदर्शन करता आया है। यह क्लब पूरी तरह से स्थानीय खिलाड़ियों पर आधारित है और आक्रामक फुटबॉल खेलना पसंद करता है। पहाड़ी और रेगिस्तानी शहर अश्गाबात में इनके खिलाफ खेलना मोहनबागान के लिए मुश्किल चुनौती साबित हो सकता है।एफसी गोवा और रोनाल्डो की चुनौतीग्रुप डी में चर्चा का सबसे बड़ा विषय है एफसी गोवा बनाम सऊदी अरब का अल-नस्र क्लब, जहां विश्व फुटबॉल के महानायक क्रिस्टियानो रोनाल्डो खेलते हैं। इसके अलावा इस ग्रुप में शामिल हैं इराक का अल-जवारा और ताजिकिस्तान का एफसी इस्तिक़लाल। रोनाल्डो की भारत में किसी आधिकारिक प्रतियोगी मैच में संभावित उपस्थिति भारतीय फुटबॉल प्रेमियों के लिए ऐतिहासिक घटना होगी। हालांकि, अंतिम निर्णय अल-नस्र प्रबंधन और रोनाल्डो पर निर्भर करेगा।

मोहनबागान और गोवा की उम्मदें

सेपाहान की परंपरा और ताक़त मोहनबागान के लिए बड़ी परीक्षा होगी। साथ ही अल हुसैन और अहाल के खिलाफ भी पूरी सावधानी बरतनी होगी। पिछले सीज़न की तुलना में इस बार मोहनबागान के पास सफलता हासिल करने का बेहतर मौका है। ड्यूरंड कप में असफलता के बाद कोच मोलिना के मार्गदर्शन में टीम जोरदार तैयारी कर रही है। इस सीज़न में उन्होंने छठे विदेशी खिलाड़ी के रूप में ब्राज़ीलियन फ़ॉरवर्ड रॉबसन रॉबिन्हो को साइन किया है।

दूसरी ओर, एफसी गोवा के लिए भी यह सुनहरा अवसर हैविश्व फुटबॉल के महानायक रोनाल्डो के खिलाफ मैदान में उतरने का। 9 सितंबर को कोलकाता के किशोर भारती क्रीड़ांगन में मोहनबागान और गोवा ने अभ्यास मैच खेला, जो गोलरहित रहा। हालांकि, काफ़ा नेशंस कप में भारत की ओर से खेलते समय संदीप झिंगन की चोट ने गोवा कैंप को थोड़ा चिंतित किया है। फिर भी, कोच मानोलो मार्केज़ की टीम पहले मैच में अल-जवारा के खिलाफ आत्मविश्वास से भरी हुई है।नया इतिहास लिखने की ओरइस बार एएफसी चैंपियंस लीग टू का अभियान भारतीय फुटबॉल इतिहास में नया अध्याय रचने जा रहा है। देशभर के प्रशंसक मोहनबागान और गोवादोनों टीमों से चमकदार प्रदर्शन की उम्मीद लगाए बैठे हैं।

स्वामी मोहता पब्लिशिंग हाउस के लिए, प्रकाशक, मुद्रक : अजय कुमार मोहता द्वारा अरिहंत मुद्रा, 61, सूर्यसेन स्ट्रीट, कोलकाता-700009 से मुद्रित एवं प्रकाशित। **संपादकीय कार्यालय** : 10, डॉ. राजेन्द्र प्रसाद सरणी, (क्लाइव रो), 5बी मंजिल, रूम नं. 9, कोलकाता-700001, **स्थानीय कार्यालय** : 28-5 कन्वेंट रोड, मौलाली, कोलकाता-700014। **संपादक : अजय कुमार मोहता**, मो. 9830045693, E-mail-gambheersamachar@gmail.com. Website. www.gambheersamachar.in (प्रकाशित रचनाओं के चयन, संपादन हेतु पीआरबी एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी, सभी कानूनी विवाद के लिए कोलकाता न्याय क्षेत्र)